ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार

संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्षः ०१ अंकः १०

'देवस्य'

'देवस्य' शब्द में गायत्री महामंत्र की दिव्यता संजोयी व समायी है। इस दिव्यता को पाकर ही जीवन देवोपम बनता है। जिसने इस दिव्यता को पाया, वह स्वयं देवता बन गया। वर्तमान में यह स्थिति- यह अवस्था भले ही कहीं दिखाई न देती हो, पर बीते युगों में ऐसा नहीं था। ऋषियुग में, वेदयुग में गायत्री साधना से सिद्ध हुए मनुष्य 'भूसुर' या 'भूदेव' कहलाते थे। भूसुर या भूदेव इन दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है- धरती का देवता। यह कोई काल्पनिक उपाधि नहीं थी। यह इन महामानवों की जांची-परखी रोज अनुभव में आने वाली सहज प्रमाणित योग्यता थी। इसी योग्यता के बलबूते ये देवों की ही भांति वरदान देने में सहज समर्थ होते थे। उनके मुख से निकला हुआ कोई भी शब्द कभी असत्य नहीं होता था। इन्हीं के लिए कहा गया था- 'विप्र वचन किमि होई असांचा' भला विप्र का वचन मिथ्या कैसे हो सकता है।

ऐसा देवत्व-देवतुल्य सामर्थ्य- गायत्री महामंत्र की सतत साधना की सहज परिणति है। बीते युग में जब गायत्री के सत्य व सत्त्व से अनेक-अनेक लोगों में यह दिव्यता व देवत्व प्रकट हुआ था, तब उस युग को सतयुग या देवयुग भी कहा गया। उस सुप्त अथवा लुप्तयुग को फिर से प्रकट करने के लिए चिर परीक्षित उपाय एक ही है- सर्वजनव्यापी गायत्री साधना का विस्तार। इसके लिए साधक को 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' अर्थात् देवगुणों को अपना कर ही देवता की उपासना करनी होगी। गायत्री साधना के साधक में भी माता गायत्री के गुणों का होना अनिवार्य है, ऐसा होने पर ही गायत्री मंत्र के देवस्य शब्द की अनुभूति हो सकेगी।

हृदय से हृदय तक

नूतन संवत्सर में समायी नवीन संभावनाओं ने हृदय को झंकृत किया है और तप साधना का निमंत्रण भेजा है। इस माह ०६ अप्रैल को 'क्रोधी' नामक नवसंवत्सर का आरंभ हो जाएगा। नवसम्वत्सर के इन नौ दिनों में आदिशक्ति माता गायत्री ने अपनी सन्तानों को शक्ति का अनुदान देने के लिए पुकारा है। हम सभी यह भली-भांति जानते हैं कि नवसंवत्सर के साथ आने वाली चैत्र नवरात्रि साधना का श्रेष्ठ व सर्वोत्तम मुहूर्त है। यह साधना का महापर्व है, संकल्पित साधना के लिए दिव्य पुकार है। साधना हेतु यह समय असामान्य और असाधारण है। यूँ तो साधना कभी भी और किसी भी समय की जा सकती है परन्तु श्रेष्ठतम मुहूर्त में विशेष विधि-विधान तथा उचित रीति-नीति से सम्पन्न की जाने वाली साधना के प्रभाव परिणाम अत्यन्त व्यापक और अद्भुत होते हैं। ऐसी साधना से हठीली वृत्तियों एवं चट्टानी प्रारब्ध के असह्य ताप घटते-मिटते हैं और जीवन में पवित्रता-दिव्यता का नवोदय होता है, उत्साह और उमंग का अवतरण होता है।

यह साधना विज्ञान के तत्त्वज्ञ महान साधकों-महर्षियों का अनुभूत सत्य है। यह शास्त्रसम्मत भी है, जिसके प्रभाव तीव्र एवं त्वरित होते हैं। बशर्ते कि साधना के अनुशासनों एवं नियमों का उचित ढंग से पालन किया गया हो। शास्त्रनिर्देश है कि साधनावधि में नमक, खार, खटाई, प्याज आदि निषिद्ध भोजन, पान, दो बार का भोजन तथा कुसंग और प्रमाद आदि त्याग देना चाहिए। साधना के प्रारम्भिक दिन से लेकर अन्तिम दिन तक एक सा, एक ही संख्या में जप करें, न कम करें न अधिक। निरन्तर ऐसा करते ही रहें, क्रम एवं व्यवस्था बनाये रखें, अपनी वृत्तियों के फेर में लिप्त न हो जायें। प्रातः से लेकर मध्याह्न तक विधिवत् जप करते रहें। मन से पवित्र रहें और साधना काल में सदा मंत्र के अर्थ का चिंतन करते रहें। साधना और तप के ये सभी सूत्र मिलकर साधक को उच्चस्तरीय चेतना की ओर आरोहित करते हैं।

नवरात्रि के साधनाकाल में इन्हें अपनाने धारण करने वालों को साधनात्मक उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। साधना के अन्तिम दिन साधक को भावपूर्ण पूर्णाहुति के रूप में हवन की पुण्य प्रक्रिया को पूर्ण करना चाहिए। इसके साथ यह भाव भी सन्निहित होना चाहिए कि गायत्री परिवार के सभी तपस्वी परिजनों की सम्मिलित तप ऊर्जा से वैयक्तिक एवं वैश्विक आपदा-विपदाएँ विनष्ट हो रही हैं और माँ गायत्री की कृपा से उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ मूर्त रूप ले रही हैं। चैत्र नवरात्रि के इस विशेष साधना और तप के सुविकसित तप प्रयोग से दिव्य व पावन परिणाम अवश्य ही उत्पन्न होंगे और इनकी परिणति सुखद व आश्चर्यकारी होगी।

साथ ही यह स्मरण अवश्य रहे कि साधना की इस समस्त प्रक्रिया का एक ही उद्देश्य है कि भूतल पर अवतरण की भांति हमारे हृदय में भी सनातन ब्रह्म एवं आद्यशक्ति के रूप में मर्यादापुरुषोत्तम प्रभु श्री राम और माता सीता का अवतरण संभव हो सके। ऐसा होने पर ब्रह्म एवं शक्ति के सनातन ऐक्य की आनंदित करने वाली अनुभूति संभव हो सकेगी जिसे महाकवि तुलसीदास ने मनोहारी रूप में में व्यक्त करते हुए कहा- सीयाराम मय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

इसी के साथ इस परम पवित्र चैत्र माह की त्रयोदशी को भगवान महावीर की जयंती और पूर्णिमा को पवनपुत्र रामभक्त हनुमान जयंती का दिव्य सुयोग भी है। आप सभी इस पुण्य पर्व पर युगों से हमारे सनातन विश्वास एवं आस्था के केंद्र ब्रह्मस्वरूप भगवान राम एवं आद्यशक्तिस्वरूपा भगवती सीता के अभिन्न युगल को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अपनी साधना यात्रा शुरू करें और शिवस्वरूप हनुमान जी हमारे अंदर 'सीयाराम मय सब जग जानी का अमृत भरकर हमारी इस साधना यात्रा को शिवत्व प्रदान करें।

अरुण कुमार जायसवाल

SUCCESS

Success is the most coveted status in this world and just like its contrarian; failure is a highly elusive thing. What determines success and the opposite of it is something that keeps transforming itself depending on incidents, circumstances, psychological states of mind, the generic yardstick of measurement tools and human perspectives. From the evolution of time, a successful person is evaluated with her or his worldly collection of ultra –expensive gadgets, mansions, villas, yachts and a never ending list of luxuries and a profligate lifestyle with unconceivable amount of money lying around. A successful person is someone who has worked hard to achieve that kind of grandeur and has a standing in the world or someone who was born to the manor and is still a high sustainable variable of success in the crème de la crème crowd.

But success is a lot like truth. The true nature of it still escapes many and the customary extent prevails. But what does it mean to be really successful and what quantifies success in the truest sense? Because if success is defined by richness, then there is no end to how rich one can be. It is relative by nature and like mentioned above, there are several dimensions to material wealth. So then, how is it that the richest people are not the happiest by that argument? Also why is it that some of the happiest people are nowhere near being wealthy? This is where the truth of the answer is found.

Finland is supposed to be the happiest country in the world. The people of this country lack nothing and they are the best provided for in the world with and have abundant resources. Bhutan is also an interesting and one of the finest exemplary of what constitutes success. Interestingly, Finland ranks as the happiest country because its GDP is very high and there is no poverty in Finland. But there is poverty in Bhutan and the GDP there is not measured by money but by how happy a person is in her or his life. Is the average Bhutanese then happy with the modest income? Perhaps a sizeable dearth of amenities will make their life more comfortable and relaxed. There are acute shortages of things but the heartening and humbling thing is that the citizen of Bhutan is still happy. She or he sleeps well, does not complain about the lack of finance and is contented. Two nations, a far from one another with no commonalities and at polarities as to how success is perceived. And the most beautiful and heart touching story is about Bhutan. There is spirituality with Bhutan which is different from the consumerist idea of happiness of Finland. Bhutan probes into what real success is truly about. It is about being grateful with what one already has and how one can live with limited resources and still manage to be happy. It is about being with Nature and deeply knowing that there is nothing richer than Nature. The trees, the mountains, the rivers are worshipped and the locals believe that anyone who is close to the natural world is happy because of the proximity.

Real success is not about pots and pots of money but it is about how that money can be utilized to make the not so fortunate be uplifted in life. It is about the acknowledgement of that privilege and being appreciative. Instead of knocking in discontent- be aware of the blessing and make the most of it by giving a part of it back to the very society from where it comes. Success is about having good health, cheer and a sense of calm that comes with the feeling that it is the present that counts. So everything that comes with being in the moment and the mindfulness of the present is what comprises of being actually successful. To let go of shackles of the past and the fear of the unknown future is what success is about. Success is when we lead a good and honest life and work hard to achieve our goals without compromising with our inner core.

There is an infinite list of people who have been successful and their attainment is not quantified with possessions. It rather comes with how they transformed thinking patterns, threw more light on the real

truth, triumphed over corrupt systems and made lives matter wherever they lived or continue to do that good work. Money becomes an artificial thing when one looks at the realistic goals achieved by these successful people who changed generations with their practices.

One of our biggest objectives in life must not be about achieving success but how the candidness of that success shapes our lives in turn for the betterment of the human race. It is not about failures letting us down but the spirit of never giving up. To have the moral strength to ascend again and once the mission is accomplished- to sustain that success and make us kind and gracious.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

जीवनमूल्य चुकाओ बनो महान

मानव महान से महान बनने के लिए इस संसार में आया है पर वह क्षुद्र आचरण या क्षुद्र सोच से महान नहीं बन सकता है । इस हेतु उसे अपने अन्तःकरण में उच्च विचारों की खेती करनी होगी और अपने मन पर चढे मैल के परतों को हटाने के लिए जीवनमूल्य चुकाना होगा । ये जीवनमूल्य हैं क्या – ये हैं उसके सद्गुण जिनके पल्लवन और पोषण के लिए उसे अपने दुर्गुणों रूप खर - पतवार को हटाकर सद्गुणों रूप अच्छे और पुष्ट बीजों को अपने अन्तःकरण रूप खेत में बोना होगा और ऋषितुल्य आचरण करना होगा, भक्ति की ओर कदम बढाने होंगे, ज्ञान की प्यास से युक्त होना होगा, सत्कर्म करने होंगे अगर वह ऐसा करेगा तो कोई कारण नहीं कि उसके कदम मानव से महामानव की ओर नहीं बढेंगे । जिस तरह हम संसार की कोई भी वस्तु खरीदने जाते हैं तो मूल्य देना पड.ता है उसी तरह अध्यात्म में अगर हम कुछ पाना चाहें तो जीवनमूल्य चुकाना पड.ता है । ये जीवनमूल्य हैं – प्रेम, सत्य, तप, त्याग, धर्म, धैर्य आदि सद्गुण जिन्हें हमें अपने अन्दर पल्लवित और पोषित करना पड.ता है । बुद्ध ने ज्ञान पाया, महावीर ने कैवल्य पद पाया, पंडित । यह सब यूँ ही उनहें मुफ्त में नहीं मिल गया । इन सबने जीवनमूल्य चुकाया । हमें भी अगर इस मानव जीवन को सार्थक करना है तो उस योग्य बनने के लिए तत्पर रहना होगा तभी हमें कुछ मिल सकता है । एक छोटी सी कहानी से यह और अधिक स्पष्ट होता है -

एक राहगीर था । वह मूर्त्तिकार भी था । इसलिए हथौडी और छेनी सदैव उसके पास में रहती थी । एक बार रास्ते में थोडा सा सुस्ताने के बाद उसने एक पत्थर उठाया और उसे मूर्त्ति का रूप देने लगा । वह पत्थर उसकी हथौडी और छेनी की चोट से परेशान होकर कहने लगा कि मुझे छोड. दो, मुझे छोड. दो । मुझे मूर्ति नहीं बनना, मैं जैसा हूँ वैसा ही ठीक हूँ तो राहगीर ने उसको छोड.कर दूसरा पत्थर उठा लिया और उसे ही मनोयोग से तराशने लगा । दूसरे पत्थर ने बडे प्रेम से अपने आपको राहगीर के प्रति समर्पित कर दिया जिस कारण राहगीर उस पत्थर को अपने मनोनूकूल एक खूबसूरत आकार देने में सफल हो पाया । वह तो मूर्त्ति बनाकर वहीं उसे रखकर निर्विकार भाव से आगे की ओर बढ गया परन्तु कुछ वर्षों के बाद जब वह उसी रास्ते से लौटा तो उसने देखा कि जिस पत्थर को तराशकर उसने मूर्त्ति का आकार दिया था वह पत्थर मंदिर की मूर्त्ति बनकर सज रहा था, पद और प्रतिष्ठा पा रहा था जबकि दूसरा वह पत्थर जो तराशे जाने का दर्द सहने से इन्कार कर दिया था उसपर पाँव रखकर सभी जा रहे थे । तो एक पत्थर जिसने दर्द सहा, जीवनमूल्य चुकाया उसके पग चूमे जा रहे थे और एक पत्थर जिसने दर्द सहने से इन्कार कर दिया था, जीवनमूल्य नहीं चुकाया वह रास्ते का पत्थर बनकर सभी की ठोकरें खाने को विवश था । तो यही चीज हमारे व्यक्तित्व पर भी लागू होती है ।

परमात्मा तो उसी राहगीर की तरह एक निर्विकार मूर्त्तिकार हैं, हम जड. बुद्धि हैं, पत्थर सम हैं, अगर हम तराशे जाने का दर्द उठाने को तत्पर हैं तो परमात्मा हमें हमारी योग्यता के अनुरूप तराशकर नायाब रूप देने को तैयार हैं पर यह हमपर निर्भर करता है कि हम कितना सहन करने को तत्पर हैं । हम महामानव बनें या नहीं अच्छे और सच्चे मानव तो बन ही सकते हैं । व्यक्तित्व निर्माण के लिए तो इतना ही आवश्यक है कि हर व्यक्ति अपने आपको तराशे जाने के लिए तत्पर रहे और स्वयं भी अपने व्यक्तित्व के निर्माण के लिए तत्पर रहे । अगर अपने मन के मैल को दूर करने की व्यवस्था से हमारी जीवन शैली युक्त हो तो यह सब संभव है और हर मानव की मानसिक और आत्मिक वृद्धि का यह क्रम हो सकता है -

पशु ➡ मानव ➡ मानव ➡ देव मानव ➡ महामानव ➡ अतिमानव ➡ ईश्वर

अर्थात् मानव अगर अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य को 100 प्रतिशत जगा ले तो वही मानव भगवान भी बन सकता है क्योंकि हर जीव भगवान का अंश है । उपनिषद् कहती है "जीवो केवलः शिवः अर्थात् जीव केवल कहने के लिए शिव नहीं है अपितु अगर वह शिववत् कार्य करे तो वह वास्तव में शिव ही है" । शिव ने संसार के सृजन के लिए विष पीकर जीवनमूल्य चुकाया हम अपने सृजन के लिए अपने मन के विषों को पीकर जीवनमूल्य चुका सकते हैं और मानव से शिवत्व की सीढी पर कदम रख सकते हैं ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- जीवन सनातन है तो जीवन का धर्म भी सनातन है। हम उन सनातन बातों को ,उन शाश्वत बातों को, उन सिद्धांतों को भूल बैठे और झगड़ा करने लगे कि बुद्ध बड़े या महावीर बड़े, यह करने लगे ।क्योंकि हमें सिर्फ झगड़ा करना है ,काम नहीं करना है ,समझ पैदा नहीं करनी है। जितने भी महिमावान आए ,किसको उपदेश दिए ?मनुष्य को। बुद्ध, नानक ,महावीर, ईसा ,मोहम्मद, शंकराचार्य का उपदेश मनुष्य के लिए है ।पर हम अनुभव ही नहीं कर पाए कि हम मनुष्य हैं। हम कहते हैं हम बौद्ध हैं ,हम जैन हैं ।तो ऐसा कर्म करने से अच्छा है ना करें जिससे मनुष्य का नाश होता है ,प्रकृति का नाश होता है ।तो धर्म पूर्वक जीवन जीने का प्रयास करें तो जीवन की सार्थकता है।
- सीता जी जनक जी की पुत्री थी उन्होंने उनका पालन किया था ।सीता जी मिथिला क्षेत्र के दुर्भाग्य को दूर करने आई थी, वह मिथिला के लिए सौभाग्य लक्ष्मी थी । अकाल, दुरावस्था से पीड़ित मिथिला को उनके आगमन से सब सुख मिला। ऐसा लगा कि उनके रूप में प्रकृति ने मिथिला को सबसे अनूठा और अनोखा अनुदान दे दिया है।
- धर्म पूर्वक भी धन कमाया जा सकता है, धर्म पूर्वक भी प्रतिष्ठा कमाई जा सकती है। धन कमाना बुरी चीज नहीं है पर उसके लिए धर्म को छोड़ देना बुरी चीज है। धर्म की अवहेलना का मतलब है जीवन की अवहेलना। धर्म जीवन का नैसर्गिक रूप है, धर्म प्रकृति का नियम है।
- जब समझ पैदा हो जाएगी तब धर्म एक ईश्वरीय अनुदान के रूप में, ईश्वरीय धरोहर के रूप में ,ईश्वरीय वरदान के रूप में मनुष्य जाति को परमात्मा ने दिया है। एक समय ऐसा आएगा जब यह समझ आ जाएगी।
- शिव- शक्ति यानी अर्धनारीश्वर का स्वरूप इस बात का संकेत है कि शिव में शक्ति अतर्लीन है तो फिर संसार नहीं है ,क्योंकि संसार शक्ति की अभिव्यक्ति है ।दूसरी बात कि अगर शक्ति को शिव से अलग किया गया, शिव के साथ होने का एहसास नहीं है तो संसार का कोई काम कल्याणकारी नहीं होगा। शक्ति का शिव से पृथक होने का मतलब है शक्ति अब कल्याणकारी दिशा की ओर नहीं है। अगर कल्याणकारी दिशा की ओर नहीं है तो संसार का विनाश ,संसार का नष्ट होना निश्चित है। फिर कोई गुण कल्याणकारी नहीं होगा ।अगर तमस है तो उसका क्रोध, उसका अमर्ष अनियंत्रित हो जाएगा, अगर रजस है तो धन -ऐश्वर्य अनियंत्रित दिशा में चला जाएगा, अगर सत् है तो भी उसका ज्ञान विवेक अनियंत्रित हो जाएगा, किसी और दिशा में बह जाएगा। इसलिए शक्ति का शिव के साथ संपर्क होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।
- भगवान शिव अनादि हैं, उत्पत्ति रहित हैं। जब कुछ नहीं था तब भी वे थे, जब कुछ नहीं रहेगा तब भी रहेंगे।
- जब भावना में गहराई बढ़ती जाती है तो प्यार बढ़ता है और भावनाओं में व्यापकता बढ़ती जाती है, तो दोस्ती बढ़ती है। गहराई नहीं व्यापकता, जिसे विस्तृत कह सकते हैं, जब विस्तार बढ़ता जाता है तो दोस्ती बढ़ती जाती है। विस्तार दोस्ती है, गहराई प्यार है।
- दोस्त कई हो सकते हैं प्यार कई नहीं हो सकता। भावनाओं के विस्तार में कई शामिल है 10, 15, 25 हो जाते हैं दोस्त। प्यार कई नहीं हो सकता भावनाओं की गहराई में उतरने पर दो भी नहीं रह जाते, एक ही रह जाते हैं।
- प्यार देह से आत्मा तक की यात्रा है, पर दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है।
- ज्ञान वह है जो आपके व्यक्तित्व में उस तरह से घुल जाता है जैसे कि रक्त घुल जाता है। रक्त और प्राण की तरह संचरित होता है ज्ञान।
- सेवा वह है जो संवेदना से पनपी है, सेवा हमेशा संवेदना की कोख से पनपती है।

- सेवा वो जिसमें अहंकार विसर्जित होता है, जिसमें अहंकार संवर्धित होता है वह सेवा नहीं है।
- सेवा अपनी सहुलियत से नहीं होती, सेवा संवेदना की विकलता से होती है।
- झुकना सीखें, कपट छोड़कर प्रश्न करें और सेवा करें तो ज्ञान की प्राप्ति होगी।
- अनाधिकार को प्रकृति कुछ देती नहीं है और अधिकारी को वंचित नहीं रखती।
- प्रार्थना वह नहीं जो शब्द के द्वारा कहे जाते हैं, प्रार्थना वह है जो आपके हृदय की सच्चाई कहती हैं ,उसमें ईश्वर की अनंत कोटी समर्थ जुड़ती है ।
- प्रत्येक इच्छा जो आपकी परिपक्व है वह पूर्ण हो जाएगी, यह प्रकृति का नियम है ।पर हमारी समस्या यह है कि हमें ईश्वरीय समर्थ पर भरोसा ही नहीं करते।
- हमारा तीन शरीर होता है -स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल दृश्यमान होता है । सूक्ष्म और कारण दिखाई नहीं देता पर होता है। स्थूल शरीर हमारा भौतिक शरीर है, कर्म शरीर है, जिससे हम काम करते हैं, मेहनत करते हैं। दिखता है, प्रत्यक्ष होता है ।सूक्ष्म शरीर हमारा मन है, हमारा विचार शरीर है -विचार ,निर्णय ,विश्लेषण ,ज्ञान । कारण शरीर हमारा भाव शरीर है, हृदय में भाव ,श्रद्धा, विश्वास ,भक्ति, एहसास यह सब है।
- अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं तो भगवान को अपने हृदय में बिठाते हैं, कारण शरीर से भगवान की प्रतिष्ठा हो गई।
- हम भगवान के बारे में तर्क, वितर्क ,कुतर्क करते हैं, बड़ी-बड़ी व्याख्या करते हैं पर भगवान को हमने अपनी भावनाओं में केंद्रीय स्थान नहीं दिया है ।जब भगवान हमारे जीवन के मुख्य तत्व हो जाते हैं ,हमारी भावनाओं के केंद्र बन जाते हैं तो भगवान का एहसास भी प्रबल हो जाता है और उनकी सहायता भी मिलती है यानी जीवन में भगवान प्रतिष्ठित हो गए।
- भगवान रसमय है ।हमारे जीवन में जो सरसता है, हमारे जीवन में जो रस है उसका मूल स्रोत परमात्मा है। परमात्मा केवल तर्क और विचार का विषय नहीं है, जीवन में अनुभूति का विषय है ।जो रस की धार हमारे जीवन में बहती है या हम कहीं देखते हैं तो उसका मूल स्रोत परमात्मा है।

जिज्ञासा

प्रश्न: - मन क्या होता है?

उत्तर: - मनन हमारी विचार प्रक्रिया है। हमारा जो विचार तंत्र है वही मन है । हम विचार करते हैं, कल्पना करते हैं यही मन है ।मन हमारे अस्तित्व की विचार प्रक्रिया है ।मन हमारा सूक्ष्म शरीर है ,विचार शरीर जिसे कहते हैं। सूक्ष्म शरीर के सारे क्रियाकलाप का केंद्र मन है, स्थूल शरीर के क्रियाकलाप का केंद्र तन है ।विचार का केंद्र है मन उसी में कल्पना, निर्णय क्षमता, भाव है ।इसलिए साइकोलॉजी में बोलते हैं Cognitive सिस्टम, संज्ञान तंत्र,बोध तंत्र ।इंद्रियों में सूचना मिली तो मन उसका प्रोसेस करता है कि सूचना सही है ,गलत है। मन हमारा ज्ञान बोध तंत्र है।

प्रश्न: - दशहरा के 10 दिन राम जाति के लोग सभी के घरों में जाकर ढोलक क्यों बजाते हैं और चैती दुर्गा में ढोलक क्यों नहीं बजाते?

उत्तर: - बजाते हैं दोनों में ।जो देवी मंदिर होते हैं और नारायण तथा शिव के मंदिर होते हैं, देवी मंदिर में ढोलक नहीं शहनाई बजती है, घर में ढोलक बजाते हैं। नारायण मंदिर में ढोल -नगारे बजाते हैं ।यह परंपरा दक्षिण भारत में है ।मीनाक्षी मंदिर में शहनाई बजती है ,देवी उत्सव में शहनाई बजाने का चलन है। शिव और नारायण में ढोल बजाने का चलन है ।ढोल और ढोलक में फर्क है ।घर के बाहर ढोलक बजाते हैं ,ढोलक मांगलिक कार्यों में बजाई जाती है और ढोल उद्घोषणा के समय बजाया जाता है। गगन ढोल बजाए जाते हैं ।दूर तक गगन तक आवाज जाए और ढोलक महिलाएं बजाती हैं विवाह आदि उत्सव में ,मंगल गीत में ।ढोलक बजाकर नवरात्रि में नकारात्मक ऊर्जा को हर घर से समाप्त किया जाता है। और ऐसा नहीं कि राम जाति ही बजाते हैं, एक परंपरा है पर कोई बजा सकता है।

प्रश्न: - किसी भी काम को कल पर छोड़ने की आदत से छुटकारा कैसे मिलेगी?

उत्तर: - यह सवाल मानसिक जड़ता का है। यह व्यस्तता का सवाल नहीं है ,यह अस्त व्यस्तता का सवाल है। मानसिक जड़ता यानी प्रमाद का सवाल है ।आप किसी चीज का महत्व समझें, अपनी दिनचर्या सही करें, व्यवस्थित जीवन शैली अपनाए। किसी कार्य को कल पर टालना यह दर्शाता है कि आपकी नजर में वह कार्य विशेष महत्वपूर्ण नहीं है ।अगर महत्व समझेंगे तो कार्य कर ले जाएंगे और यह निर्भर है मानसिक सजगता पर। आपको चाहिए मेंटल अवेयरनेस। यह प्रमाद है ।शरीर में आलस्य होता है और प्रमाद मन में होता है ।जो कल पर छोड़ते हैं वह प्रमाद में जीते हैं ,प्रमादी होते हैं। प्रमाद छोड़ने के लिए यानी तमस ,तमोगुण को हटाने के लिए उपासना करें ,जप करें ,प्राणायाम करें, ध्यान करें ।यह सब आपके अंदर की जड़ता को समाप्त कर सजगता प्रदान करेगा और प्रातः काल उठने का लगातार प्रयास करें ।सूर्योदय के पहले ब्रह्म बेला, पीयूष बेला यानी अमृतवेला, प्रत्यूष बेला, उषा बेला में उठकर उपासना, आसन ,प्राणायाम करें। कोई काम दिन समाप्त होने तक

बचेगा नहीं, निश्चिंत होकर सोएंगे और उत्साहित होकर जागेंगे। फिर काम बोझ नहीं लगेगा ।समय प्रबंधन ,टाइम मैनेजमेंट अपने आप आ जाएगा। बस! सूर्योदय से पहले उठें।

प्रश्न: - कहा जाता है कि शिव मंदिर के नंदी के कानों में अपनी इच्छाएं बोलने से इच्छा पूर्ण हो जाती है।तो क्या असली सांढ के कानों में इच्छा बोलने से पूरी हो जाएगी?

उत्तर: - सांढ है क्या ?असली सांढ तो सिंग मार देगा ।नंदी को नंदीश्वर कहा जाता है । भगवान शिव समाधि से रहते हैं ,ध्यान में रहते हैं ,कभी भी समाधि में चले जाते हैं ।तो नंदीश्वर सांढ नहीं है, वह वृषभ रूप में जन्म लिया जड़ बुद्धि के कारण। फिर पिता की प्रेरणा से तपस्या शुरू की और भगवान शिव के पार्षद हो गए और देवता बन गए ।वह वृषभ रूप में तब होते हैं जब वे वाहन होते हैं भगवान शिव के । भगवान शिव के वाहन होते हुए भी वह देव रूप में हैं ।अपनी शिव भक्ति से उन्होंने शिव की प्रसन्नता और शिव का प्रेम पाया और शिव के स्वरूप हो गए ।तो कथा यह है कि भगवान शिव माता सती से भी विमुक्त होकर अमरनाथ में तपस्या करने लगे ,अखंड समाधि में लीन हो गए और नंदी को कहा कि तुम भी अंदर नहीं आओगे ।तो नंदी ने पूछा अपने भक्तों को आप यूं ही छोड़ देंगे क्या? जो भक्त आपकी भक्ति करते होंगे ?तो भगवान शिव ने कहा- नंदी, नंदी मतलब नंदीश्वर बैल नहीं या यूं कहें वह विशेष बैल जो नील कमल की तरह है ,जो दिव्य है ।तो तुम्हारे कानों में जो कह देगा वो हमारे हृदय में पहुंच जाएंगे ,यह हम तुमको वरदान देते हैं और उसकी इच्छा पूरी हो जाएगी ,कर्म अनुसार उनको सहायता मिल जाएगी ।तो अमरनाथ गुफा में ध्यानस्थ हो गए ।नंदीश्वर भी गुफा के बाहर बैठे रहे जब वे समाधि से उठेंगे तो उनकी सेवा करेंगे ,अर्चना करेंगे। वहीं वृषभ रूप हो गए वह भी भगवान शिव के ध्यान में चले गए फिर वो भी पाषाण रूप हो गए ।तो जो भी देवगण आए नंदीश्वर के कान में अपनी बात कही। तो यह खबर फैल गई जो भी बात है नंदी के कानों में कह डालें महादेव तक पहुंच जाएगी बातें।

मार्च माह की गतिविधियाँ

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ,स्थान सराही वार्ड नंबर 11,नयाबाजार सहरसा में दिनांक 5--3—24, मंगलवार से आरम्भ इस यज्ञ का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किय गया।डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि सहरसा के महापौर बैन प्रिया,डाक्टर कल्याणी सिंह,प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजली की भारती, ,कैप्टेन गौतम सिंह,सरिता पासवान उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह एवं अन्य परिजन के द्वारा मंत्र दुपट्टा ओढ़ाकर एवं तिलक लगाकर किया गया।डा0 अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा-अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घडा मात्र है। जब हम 33 कोटि देवताओं का आवाहन कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घडा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा।उन्होंने कहा-सिर्फ महिलाए ही कलश धारण करने की अधिकारिणी है क्यूंकि नारियोचित गुण भावना ह। भाव से ही भगवान का आगमन होता है। कलश यात्रा शिर्फ धार्मिक पूजन ही नहीं वल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है।यह मंगल कलश जिस जिस क्षेत्र, गली,मोहल्ले से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है।मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला,शहर के साथ-साथ संपूर्ण समाज,राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डा0 कल्याणी सिंह ने कहा-श्री जायसवाल जी ने अपना सारा जीवन समाज को समर्पित कर दिया।हम जो सोचते हैं और करते हैं हमारी आनेवाली पीढ़ी वैसा ही करती और सोचती है।उन्हों ने खर्चीली शादी के संबंध में समाज को जागरूक होना की बात कही। सरिता पासवान ने यज्ञ में सामिल होने की खुशी जताई। महापौर बैन प्रिया ने कहा-ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है। प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय जागृति का समय है। इस मंगल कलश यात्रा में लगभग 1000 एक हजार से भी ज्यादा महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण कीं। मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा,मधु,ज्योति,श्रुति,एवं युवा मंडल प्रतिनिधि थे।मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार के झांकियां प्रस्तुत की गई जिसमें बाइक गायत्री मंत्र का बैनर,गुरुदेव गुरुसत्ता रथ।स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता,शंकर आदि की झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संजय सराही,एवं सभी सदस्य तथा हजारों पुरुष एवं महिलाएं इसमें शामिल थे।

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का पहला दिन

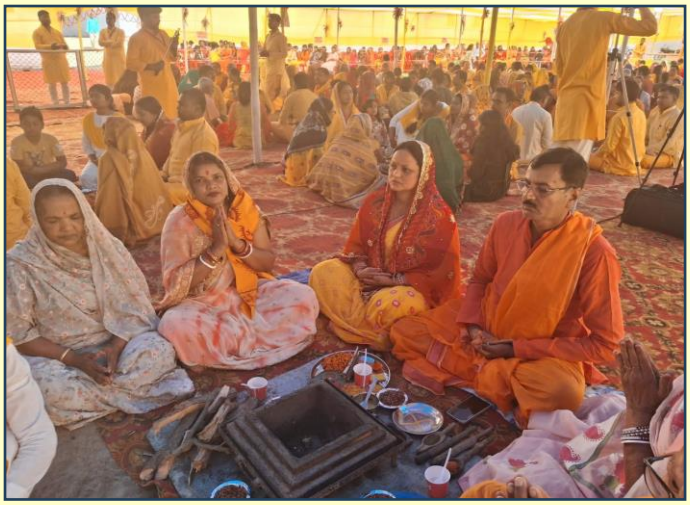

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का दूसरा दिन

गायत्री महायज्ञ स्थल सफाई

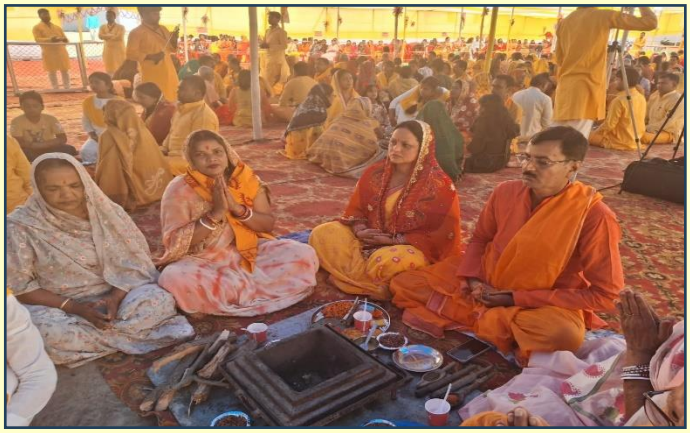

गायत्री महायज्ञ के दुसरे दिन प्रथम सत्र का शुभारंभ सामूहिक योग,व्यायाम,जप और ध्यान से हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों लोग योग के विभिन्न आसनों को जाना और उसका अभ्यास कर योग के लाभ को जाना।कार्यक्रम का संचालन करते हुए योगाचार्य सनोज कुमार ने बताया -योग हमारे जीवन में कितना उपयोगी है।अगर अपने जीवन में खुश रहना है तो योग आवश्यक है।योग से हम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन बिता पाएंगे।समस्त योग का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश द्वारा किया गया। योग के बाद प्रातः 8-30 बजे से देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुण्डों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ जो विधिवत संपन्न हुआ। प्रवचन के दौरान शांतिकुंज से आए संत टोली नायक श्री सुनील शर्मा जी ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते हुए कहा-देश,धर्म,राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है।यज्ञ से हमारा जीवन ऊंचा उठता है और बिना सत्कर्म और सद्ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होता है। इससे पूर्व 5-3-24 मंगलवार को संध्याकालीन सत्र में शांतिकुंज से आए टोली नायक संत सुनील शर्मा ने बताया सत्संग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है सत्संग के माध्यम से हम संपूर्ण इन्सान बनते हैं।युग परिवर्तन भौतिक कारणों से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से होता है।योग्यता को बढ़ाने वाला अज्ञानता. को दूर करने वाला यह समय चल रहा है।यह युग परिवर्तन का समय है।इस दौरान शांतिकुंज प्रतिनिध टोली नायक सुनील शर्मा के साथ साथ सोलंकी जी (सह नायक) रामबीर नायक "गायक",दिलवीर यादव "वादक"और "महेश तिवारी जी "मंच पर उपस्थित थे।

51 कुंडीय राष्ट्र जागरण अभियान गायत्री महायज्ञ का तीसरा दिन

दीपमहायज्ञ का मनोहारी दृश्य....

दीप महायज्ञ का विहंगम दृश्य

51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन 7-3-24 को संध्याकालीन कार्यक्रम में सत्संग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ के तत्वावधान में चल रहे बालसंस्कारशाला के बच्चों ने सोशल मिडिया नामक अद्भुत एवं प्रेरणादायक लघु नाटिका को प्रस्तुत किया।जिसका मूल उद्देश्य समाज को सोशल मिडिया और मोबाइल के दुष्प्रभाव से जागरुक करना था।इसके साथ हीं स्वरांजली संगीत केंद्र के कलाकारों द्वारा भव्य प्रदर्शन हुआ। संध्याकालीन दीप महोत्सव मनाया गया। आयोजित दीप महोत्सव में पूरे यज्ञस्थल को दीपों से सजाया गया।हजारों दीपक से पूरा यज्ञस्थल दीपोमय होकर मानों ज्ञान का प्रकाश फैला रहा था ।इस दीपोत्सव में हजारों श्रद्धालुगण उपस्थित थे। इस दौरान युग संगीत हुए।परम पुज्य गुरुदेव युग ऋषि के अमृत संदेश को शांतिकुंज से आए संत श्री सुनील शर्मा ने जन जन तक पहुँचाते हुए कहा-यज्ञ समाज में परिवर्तन का कार्य करता है।धर्म और अधर्म की लडाई में धर्म पराजित नहीं होता है।इसलिए ईन्सान को कभी धर्म का मार्ग नही छोड़ना चाहिए। सद्गुणों के समूह को भगवान कहते हैं।दीप यज्ञ से समाज का अंधकार दूर हो जाता है। दिनांक 8मार्च को गायत्री महायज्ञ के अंतिम चौथे दिन प्रातःकालीन यज्ञस्थल पर देवपूजन हुआ एवं 51 कुण्डों पर गायत्री महयज्ञ का शुभारंभ हुआ तथा महाशिवरात्रि के अवसर पर 52 कुण्डों पर शिवलिंग के प्रतीक रूप में रखकर महादेव एवं पार्वती की पूजा की गई।डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने महाशिवरात्रि के संबंध में कहा-वर्ष में चार रात्रि होती है,जिसमें सबसे पहली और श्रेष्ठ रात्रि शिवरात्रि होती है।शक्ति के तीन रूप होते हैं लक्ष्मी,काली और सरस्वती। ये तीनों शक्तियाँ गायत्री मंत्र में निहित हैं ।शिवलिंग पुरुष और प्रकृति का रुप है।परमात्मा और प्रकृति के मिलन का प्रतीक है। उसके बाद गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई। समारोह के पश्चात शांतिकुंज से आए संतों की अश्रुपूर्ण भावभीनी विदाई हुई,विदाई गीत गाकर की गई।विदाई समारोह में डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल, विशिष्ट अतिथिगण महापौर बैन प्रिया,समस्त यज्ञ समिति के सदस्यगण,और शक्तिपीठ के समस्त परिजन उपस्थित थे।

51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में ध्यान ,प्रज्ञायोग ,व्यायाम का अभ्यास कराया गया।

नामकरण संस्कार में प्रबोध देती देवकन्यायें

युवा मण्डल के लड़के लड़की उपदेश सुनते

गायत्री महायज्ञ का विहंगम दृश्य

जागरण, भास्कर, प्रभात खबर के पत्रकार परिवार के साथ शांतिकुंज हरिद्वार प्रतिनिधि, स्वरंजलि के गौतम जी, भारती एवम् अरुण जायसवाल

सन्तों को विदाई देता गायत्री परिवार

महाशिवरात्रि पर्व पर रूद्राभिषेक करते श्रद्धालु गण

महाशविरात्री पर्व पर श्रृंगार एवं आरती

दिनांक 17 मार्च 2024 (रविवार) को गायत्री शक्तिपीठ, बेगूसराय में उप-जोन गोष्ठी का आयोजन किया गया,दीप प्रज्वलन के साथ गोष्ठी की शुरुआत हुई।परिजनों को संबोधित करते हुए उपजोन समन्वयक डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल जी ने कहा हम लोग प्रत्येक तीन महीने में गायत्री परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा बैठक करते हैं एवम आगे की कार्य योजना बनाते हैं।गुरुदेव का संकल्प है धरती पर स्वर्ग का अवतरण। हम सभी को गुरुदेव के विचारों को अधिक से अधिक घरों तक पहुंचाना हैं। पांचों जिला के प्रतिनिधियों ने अपने अपने जिले में विगत तीन महीनों में किए गए कार्यों का प्रतिवेदन समर्पित किया।इस बैठक में यज्ञ,भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा,अखंड ज्योति के पाठकों की संख्या को बढ़ाने एवम पहले से तय सेवा विषय पर जिला प्रतिनिधियों में अपनी बात रखी एवम विस्तृत चर्चा हुई...साथ हीं आने वाले त्योहार होली के गीत पर झूमते परिजनों ने एक दूसरे को अबीर और गुलाल लगा कर होली की अग्रिम शुभकामना दिए। शांतिपाठ के साथ बैठक का समापन हुआ।

त्योहारों की उमंग होली के संग, गायत्री शक्तिपीठ में होली मिलन समारोह.....।

होली मिलन समारोह पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम।

प्रतिदिन सदर अस्पताल सहरसा में 1:00 बजे से 2:00 बजे के बीच गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद का वितरण .....

प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार की तरह दिनांक 31-03-2024 (रविवार) को सहरसा जिला के महिषी प्रखंड के अंतर्गत झाड़ा गांव में 25 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवम एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया।साथ ही, पर्यावरण संतुलन हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया।गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।जिसमें गायत्री परिवार सहरसा की माताओं, बहनों एवं भाइयों ने अहम भूमिका निभाई।

युवती मंडल, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

दैनिक भास्कर

पतरघट • महिषी • राजपुर

धर्म-कर्म • कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन ही नहीं, बल्कि जनजागरण की संपूर्ण व्यवस्था: डॉ. अरुण जायसवाल

नया बाजार में चार दिवसीय राष्ट्र जागरण अभियान गायत्री महायज्ञ में उमड़ी भीड़, निकली कलश यात्रा

भास्कर न्यूज|सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ के तत्वावधान में मंगलवार को नगर निगम क्षेत्र के सराही में 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ। इस चार दिवसीय महायज्ञ के प्रथम दिन विधिवत रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया तथा मौके पर भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा यज्ञ स्थल से शुरू होकर नया बाजार, थाना चौक, डीबी रोड, दहलान चौक, गांधी पथ होते हुए पुनः यज्ञ स्थल पहुंचा। गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी अरुण कुमार जायसवाल के नेतृत्व में कलश यात्रा में हजारों की संख्या में महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कलश यात्रा के साथ साथ झांकी भी निकाली गई। मेयर बैन प्रिया, लार्ड बुद्धा कोसी मेडिकल कॉलेज की चेयरमेन प्रसिद्ध महिला चिकित्सक डॉ कल्याणी सिंह, पूर्व प्राचार्य डॉ रेणु सिंह, लोजपा नेत्री सरिता पासवान, जदयू जिलाध्यक्ष चंद्रदेव मुखिया, सहित अन्य अतिथियों ने यज्ञ का प्रारंभ दीप प्रज्वलित कर किया। उद्घाटन में मेयर प्रत्याशी जितेंद्र सिंह चौहान, आरएसएस प्रवक्ता सुदीप प्रसाद सिंह, प्रो गौतम सिंह, कैप्टन गौतम भगत सहित अन्य उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हुए। देर शाम सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मां गायत्री की महिमा पर प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कलश यात्रा प्रारंभ होने से पूर्व कलश की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन ही नहीं, बल्कि जनजागरण की संपूर्ण व्यवस्था है। कलश जिन जिन गलियों, मोहल्लों एवं सड़कों से गुजरती है, वहां की नकारात्मकता स्वतः ही समाप्त हो जाती है। फिर श्रद्धालुओं का कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला एवं शहर के साथ-साथ संपूर्ण समाज, राष्ट्र एवं पृथ्वी का उत्थान होता है।

मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में उमड़ी महिला श्रद्धालुओं की भीड़।

राष्ट्र जागरण अभियान गायत्री महायज्ञ के तहत निकाली गई कलश यात्रा।

51 कुंडीय राष्ट्र जागरण अभियान गायत्री महायज्ञ के अवसर पर मौजूद गायत्री शक्तिपीठ के प्रतिनिधि व अतिथि।

यह समय जागृति का है

पूर्व प्राचार्य डॉ रेणु सिंह ने कहा कि यह समय जागृति का समय है। पूर्व प्रत्याशी सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने पर हर्ष जताते हुए लोगों से इस में बढ़चढ़कर भाग लेने की अपील की। स्वरांजलि के भारती ने संस्कार की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर यज्ञ के प्रथम दिन का पूजन कार्यक्रम युवती मंडल के मनीषा, मधु, ज्योति एवं प्रखर द्वारा विधिवत रूप से संपन्न कराया गया।

महिलाएं ही सिर्फ कलश धारण क्यों कर सकती है?

डॉ. जायसवाल ने इस बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि पुरुष एक सीमा के बाद कहीं अंदर नहीं जा सकते हैं जबकि महिलाएं इस सीमा से नहीं बंधी होती है। इस अवसर पर मेयर बैन प्रिया ने मां की विशेषता बताते हुए कहा कि ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकते इसलिए उन्होंने मां को बनाया है। लार्ड बुद्धा कोसी मेडिकल कॉलेज की चेयरमेन डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि हम जो सोचते और करते है, आनेवाली पीढ़ी वहीं सोचते और करते... उन्होंने लोगों को खर्चीली... परहेज रहने की...

आयोजन | सराही में में आयोजित कलश यात्रा में शामिल हुईं हजारों महिलाएं, गायत्री महायज्ञ से पूरे इलाके का माहौल भक्तिमय

कलश यात्रा के साथ गायत्री महायज्ञ का हुआ शुभारंभ

धर्म-कर्म

सहरसा, नगर संवाददाता। शहर के सराही वार्ड 11 में मंगलवार को राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ। दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।

दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया, डॉ कल्याणी सिंह, पूर्व प्राचार्या रेणु सिंह, भारती सिंह सुदीप प्रसाद सिंह, लेफ्टिनेंट गौतम, सरिता पासवान, देवेंद्र कुमार देव मौजूद थे। डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घड़ा मात्र है। जब 33 कोटि देवताओं का आवाह्न कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घडा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ महिलाए हीं कलश धारण करने की अधिकारिणी है। कलश यात्रा शिर्फ धार्मिक पूजन हीं नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है। वह मंगल कलश जिस क्षेत्र, से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है। मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मुहल्ला, शहर के साथ साथ संपूर्ण समाज, राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि हम जो सोचते हैं और करते हैं। हमारे आनेवाली पीढ़ी वैसा हीं करती और सोचती है। उन्होंने खर्चीली शादी के संबंध मे समाज को जागरूक होने का संदेश दिया। महापौर बैन प्रिया ने कहा कि ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है। प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय जागृति का समय है।

गायत्री यज्ञ का उदघाटन मौके पर मौजूद मेयर, चिकित्सक, ट्रस्टी सहित अन्य।

मंगलवार को निकली कलश यात्रा में शामिल कन्याएं। • हिन्दुस्तान

मंगल कलश यात्रा में लगभग 1000 एक हजार से भी अधिक महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण किया। कलश यात्रा यज्ञ स्थल से निकलकर शहर के विभिन्न मार्ग होते हुए वापस लौटी। मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कान्या मनीषा, मधु, ज्योति, श्रुति, एवं प्रखर थे। मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार की झांकियां प्रस्तुत की गई। स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता, शंकर आदि झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संजय सराही सहित अन्य मौजूद थे। 8 मार्च तक आयोजित होने वाले कार्यक्रम में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

कलश यात्रा से समाज की मिटती है नकारात्मकता

कलश पूजन करती युवतियां ● जागरण

कलश यात्रा मे शामिल झांकी ● जागरण

संसू, सहरसा: राष्ट्र जागरण अभियान के तहत गायत्री शक्तिपीठ द्वारा 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ किया गया। पांच मार्च से आठ मार्च तक होनेवाले गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ दीप पूजन के साथ किया गया। महायज्ञ को संबोधित करते हुए शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कलश की महत्ता को बतलाते हुए कहा कि कलश सिर्फ धार्मिक पूजन नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है। कलश जिस- जिस गली, मुहल्ला से होकर गुजरेगी, वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है। कलश यात्रा से क्षेत्र, मुहल्ला, शहर के साथ- साथ संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद डा. कल्याणी सिंह ने श्रद्धालुओं का अभिवादन करते हुए कहा कि ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल जी का पूरा जीवन समाज को समर्पित कर दिया है। हम जो सोचते हैं और करते हैं, हमारी आगे आनेवाली पीढी वैसा ही करती और सोचती है। नगर निगम की मेयर बैन प्रिया ने कहा कि ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता, इसीलिए उन्होंने मां को बनाया है। शिक्षाविद डा. रेणु सिंह ने कहा कि यह समय जागृति का समय है। संगीत विधा से जुड़ी भारती सिंह ने संस्कार की महत्ता को बतलाया। सामाजिक कार्यकर्ता सरिता पासवान ने कहा कि मनुष्य की आत्म संतुष्टि के लिए यज्ञ जरूरी है। महायज्ञ के पहले दिन ही पूजन समारोह के दौरान ही सुदीप प्रसाद सिंह, बंटू सिंह, प्रो. गौतम कुमार सिंह, रीना आदि को गायत्री मंत्र दुपट्टा देकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के जिला संयोजक ललन सिंह सहित हरीश जायसवाल, मोहन साह, कैप्टन गौतम कुमार, सुबोध साह आदि मौजूद थे। इससे पहले शुरू में ही ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल, मेयर बैन प्रिया, डा. कल्याणी सिंह, आरएसएस प्रवक्ता सुदीप कुमार सिंह, प्रो. रेणु सिंह, भारती सिंह, सरिता पासवान, कैप्टन गौतम कुमार आदि ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर महायज्ञ की शुभारंभ किया।

शहर में निकाली गयी महिलाओं की मंगल कलश यात्रा: चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ को लेकर मंगलवार की सुबह में शहर में महिलाओं की मंगल कलश यात्रा निकाली गयी। यज्ञ स्थल से ही युवतियों व महिलाओं की टोली कलश पूजन के बाद कलश यात्रा निकाली गयी। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में युवती व महिलाएं थी। सिर पर कलश धारण का खुले पांव ही शहर का भ्रमण कर वापस यज्ञ स्थल पहुंचा। कलश यात्रा में आकर्षक झांकी शहरवासियों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी रही।

सहरसा जिला

भागलपुर, बुधवार 06.03.2024 | 02

श्रद्धालुओं को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का हुआ भव्य शुभारंभ, निकली कलश यात्रा व झांकी

कलश यात्रा धार्मिक पूजन नहीं, जन जागरण की व्यवस्था है

प्रतिनिधि, सहरसा

नगर निगम क्षेत्र के नया बाजार सराही वार्ड 11 में मंगलवार से राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है। दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया, डॉ कल्याणी सिंह, पूर्व प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजलि की भारती सिंह, सुदीप प्रसाद सिंह, कैप्टन गौतम कुमार, सरिता पासवान थे। विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह व अन्य परिजन द्वारा मंत्र दुपट्टा व तिलक लगाकर किया गया। डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा कि अभी यह कलश मिट्टी का घड़ा मात्र है। जब हम 33 कोटि देवताओं का आह्वान कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घड़ा नहीं रहकर मंगल कलश हो जायेगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ महिलाएं ही कलश धारण करने की अधिकारिणी है।

कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन ही नहीं, बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है। यह मंगल कलश जिस-जिस क्षेत्र, गली-मोहल्ले से होकर गुजरती है, वहां की नकारात्मकता खुद ही मिट जाती है। मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला, शहर के साथ संपूर्ण समाज, राष्ट्र व संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। इस अवसर पर अतिथि डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि जायसवाल ... अपना सारा जीवन समाज को समर्पित कर दिया। हम जो सोचते हैं एवं करते हैं हमारे आने वाली पीढ़ी वैसा ही करती व सोचती है। उन्होंने खर्चीली शादी के संबंध में समाज को जागरूक होना की बात कही। सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने की खुशी जताई। महापौर बैन प्रिया ने कहा कि ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकते, इसलिए मां को बनाया है। प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा कि यह समय जागृति का समय है। इस मंगल कलश यात्रा में लगभग एक हजार से भी अधिक महिलाओं ने अपने सिर पर मंगल कलश धारण किया। मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा, मधु, ज्योति, श्रुति एवं प्रखर थे। मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार की झांकियां प्रस्तुत की गयी, जिसमें गायत्री मंत्र का बैनर, गुरुदेव गुरु सत्ता रथ, स्वरांजलि एवं बाल संस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता, शंकर की झांकी प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर यज्ञ समिति अध्यक्ष संजय सराही सहित विजय कुमार सिंह, संजय यादव, कैलाश साह, दिनेश पासवान, ललन यादव, महेश कुमार चुन्नू सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

कलश यात्रा मे भाग लेती महिलाएं।

झांकी प्रस्तुत करते बच्चे

गायत्री शक्तिपीठ द्वारा राष्ट्र जागरण के लिए चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ शुभारंभ

कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन ही नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/ सहरसा।

राष्ट्र जागरण अभियान के निमित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सराही वार्ड नंबर 11,नयाबाजार में मंगलवार को दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया।डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया,डा कल्याणी सिन्हा,प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजली के भारती,राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रवक्ता सुदीप प्रसाद सिंह,कैप्टेन गौतम सिंह,सरिता पासवान उपस्थित थे।विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह एवं अन्य परिजन के द्वारा मंत्र दुपट्टा एवं तिलक लगाकर किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घड़ा मात्र है।जब हम 33 कोटि देवताओं का आवाहन कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घड़ा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा।उन्होंने कहा-सिर्फ महिलाए हीं कलश धारण करने की अधिकारिणी है।कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन हीं नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है।यह मंगल कलश जिस जिस क्षेत्र, गली,मोहल्ले से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है।मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला,शहर के साथ साथ संपूर्ण समाज,राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डाक्टर कल्याणी सिन्हा ने कहा श्री ...वाल जी ने अपना सारा जीवन समाज को ...दिया।हम जो सोचते हैं और करते हैं हमारे आनेवाली पीढ़ी वैसा हीं करती और सोचती है।उन्होंने खचीर्ली शादी के संबंध मे समाज को जागरूक होना की बात कही। सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने की खुशी जताई।महापौर बैन प्रिया ने कहा-ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है।प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय राष्ट्र जागृति का समय है।इस मंगल कलश यात्रा में लगभग एक हजार से भी ज्यादे महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण किए।मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा,मधु,ज्योति,श्रुति,एवं प्रखर थे।मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार के झांकियां प्रस्तुत की गई जिसमें बाइक गायत्री मंत्र का बैनर,गुरुदेव गूरूसत्ता रथ,स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता,शंकर आदि झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संजय सराही,एवं सभी सदस्य तथा हजारों पुरुष एवं महिलाएं इसमें शामिल थे।

जमीनी विवाद में गोलीबारी,थाना में मामला दर्ज

मीडिया दर्शन/ पतरघट सहरसा। थाना क्षेत्र के सखौड़ी में सोमवार के शाम जमीन विवाद में दो पक्षों के बीच हुई गोलीबारी हुई। गोलीबारी में कोई हताहत नहीं हुआ। पतरघट थाना में दोनों पक्षों के द्वारा दिये गये आवेदन पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।एक पक्ष के सखौड़ी निवासी प्रीति कुमारी पति सौरभ कुमार ने दिये आवेदन में कहा है कि जमीन विवाद में दरवाजे पर उनके पति सौरभ कुमार को पड़ोसी सुबोध यादव, हिमांशु यादव, गगन यादव गाली गलौज करते मारपीट करने लगा। तथा सुबोध यादव का सहयोगी गगन यादव देसी कट्टा से फायर करने लगा। जिसमें उनका पति बाल बाल बच गया। सभी डर से जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। वहीं दुसरे पक्ष का सुबोध यादव पिता सियाशरण यादव ने दिये आवेदन में कहा है कि सोमवार को 5 बजे शाम में उनके दरबाजे पर लगे बांस की जाफरी को सौरभ कुमार कुछ असामाजिक तत्वों के सहयोग से गाली-गलौज करते तोड़ने लगा।तथा ग्रामीण रामदास, अमीत कुमार, रणवीर कुमार, रंधीर कुमार के सहयोग से मारपीट करते चार फायर किया।जानकारीनुसार दोनों पक्षों के बीच हुई विवाद में चार पांच चक्र गोली फायर होने की बात कही जा रही है। इस बावत थाना अध्यक्ष पुनि अजय कुमार पासवान ने बताया कि दोनों पक्षों के आवेदन पर पर सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की जा रही हैं।

जी एस न्यूज | सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ द्वारा राष्ट्र जागरण के लिए चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ शुभारंभ

जीएस न्यूज|सहरसा

राष्ट्र जागरण अभियान के निमित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सराही वार्ड नंबर 11,नया बाजार में मंगलवार को दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया।डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया,डा कल्याणी सिन्हा,प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजली के भारती,राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रवक्ता सुदीप प्रसाद सिंह,कैप्टेन गौतम सिंह,सरिता पासवान उपस्थित थे।विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह एवं अन्य परिजन के द्वारा मंत्र दुपट्टा एवं तिलक लगाकर किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घड़ा मात्र है।जब हम 33 कोटि देवताओं का आवाहन कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घड़ा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा।उन्होंने कहा-सिर्फ महिलाए हीं कलश धारण करने की अधिकारिणी है।कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन हीं नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है।यह मंगल कलश जिस जिस क्षेत्र, गली,मोहल्ले से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है।मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला,शहर के साथ साथ संपूर्ण समाज,राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है।इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डाक्टर कल्याणी सिन्हा ने कहा श्री जायसवाल जी ने अपना सारा जीवन समाज को समर्पित कर दिया।हम जो सोचते हैं और करते हैं हमारे आनेवाली पीढ़ी वैसा हीं करती और सोचती है।उन्होंने खर्चीली शादी के संबंध मे समाज को जागरूक होना की बात कही।सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने की खुशी जताई।महापौर बैन प्रिया ने कहा-ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है।प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय राष्ट्र जागृति का समय है।इस मंगल कलश यात्रा में लगभग एक हजार से भी ज्यादे महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण किए।मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा, मधु, ज्योति,श्रुति,एवं प्रखर थे।मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार के झांकियां प्रस्तुत की गई जिसमें बाइक गायत्री मंत्र का बैनर,गुरुदेव गूरूसत्ता रथ,स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता,शंकर आदि झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संजय सराही एवं सभी सदस्य तथा हजारों पुरुष एवं महिलाएं इसमें शामिल...

दैनिक भास्कर सहरसा 09-03-2024

सहरसा • सिमरी बख्तियारपुर • पतरघट

धर्म-कर्म • शहर के सराही-नया बाजार में चल रहे चार दिवसीय राष्ट्र जागरण 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का दीप यज्ञ व हवन के साथ हुआ संपन्न

धर्म और अधर्म की लड़ाई में धर्म पराजित नहीं होता, इसलिए इंसान को कभी धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए: सुनील शर्मा

पहला संयोग... महाशिवरात्रि के दिन रूद्राभिषेक और हवन के साथ हुआ महायज्ञ का समापन

समाज में परिवर्तन का काम करता है यज्ञ

मंत्रों के बीच दीप यज्ञ कराया गया संपन्न

51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के दौरान प्रवचन करते संत।

जट-जटिन की बेहतरीन प्रस्तुति दी

यज्ञ समाज में परिवर्तन का करता है कार्य: डॉ अरुण

- धर्म व अधर्म की लडाई में धर्म नहीं होता है पराजित
- चार दिवसीय राष्ट्र जागरण 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का हुआ समापन

प्रतिनिधि, सहरसा

नया बाजार सराही वार्ड 11 में राष्ट्र जागरण 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के अंतिम चौथे दिन शुक्रवार की सुबह यज्ञस्थल पर देवपूजन किया गया. साथ ही 51 कुंडों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ व महाशिवरात्रि के अवसर पर 52 कुंडों पर शिवलिंग के प्रतीक रूप में रखकर महादेव व पार्वती की पूजा की गयी. डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने महाशिवरात्रि के संबंध में कहा कि वर्ष में चार रात्रि होते हैं. जिसमें सबसे पहली एवं श्रेष्ठ रात्रि शिवरात्रि होती है. शक्ति के तीन रूप हशलक्ष्मी, काली व सरस्वती हैं. ये तीनों शक्तियां गायत्री मंत्र में निहित है. शिवलिंग पुरुष व प्रकृति का रूप है. परमात्मा व प्रकृति के मिलन का प्रतीक है. उसके बाद गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की गयी. समारोह के बाद शांतिकुंज से आये संतों की अश्रुपूर्ण भावभीनी विदाई गीत गाकर दी गयी. विदाई समारोह में डॉ अरुण कुमार जायसवाल, विशिष्ट अतिथि महापौर बैन प्रिया, समस्त यज्ञ समिति के सदस्य, शक्तिपीठ के समस्त परिजन मौजूद थे. वहीं तीसरे दिन संध्याकालीन कार्यक्रम में सत्संग व सांस्कृतिक कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ के तत्वावधान में चल रहे बाल संस्कारशाला के बच्चों ने सोशल मीडिया नामक अद्भुत एवं प्रेरणादायक लघु नाटिका प्रस्तुत की. जिसका मूल उद्देश्य समाज को सोशल मीडिया एवं मोबाइल के दुष्प्रभाव से जागरुक करना था. इसके साथ ही स्वरांजलि व सरोजनी के कथाकारों द्वारा भव्य प्रदर्शन हुआ. संध्याकालीन दी महोत्सव मनाया गया. दीप महोत्स पूरे यज्ञस्थल को दीपों से सजा

हवन के लिए जुटे श्रद्धालु.

नारी शक्ति के कारण गायत्री यज्ञ रहा सफल

गायत्री महायज्ञ

सहरसा, नगर संवाददाता। शहर के नया बाजार सराही वार्ड नंबर 11 में चल रहे चार दिवसीय 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का शुक्रवार को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ समापन हो गया।

शुक्रवार को महायज्ञ के अंतिम चौथे दिन सुबह यज्ञस्थल पर देवपूजन हुआ एवं 51 कुण्डों पर गायत्री महयज्ञ का शुभारंभ हुआ। महाशिवरात्रि के अवसर पर 52 कुण्डों पर शिवलिंग के प्रतीक रूप में रखकर महादेव एवं पार्वती की पूजा की गई। डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने महाशिवरात्रि के संबंध में कहा-वर्ष में चार रात्रि होती है, जिसमें सबसे पहली और श्रेष्ठ रात्रि शिवरात्रि होती है। उन्होंने कहा नारी शक्ति के कारण ही यह यज्ञ सफल रहा। गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात शांतिकुंज से आए संतों की विदाई हुई। विदाई समारोह में विशिष्ट अतिथिगण महापौर बैन प्रिया, कैप्टेन गौतम सहित समस्त यज्ञ समिति के सदस्यगण उपस्थित थे।

इससे पूर्व गुरुवार रात कार्यक्रम के दौरान बालसंस्कारशाला के बच्चों ने सोशल मीडिया नामक अद्भुत एवं प्रेरणादायक लघु नाटिका की प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गायत्री शक्तिपीठ के ललन कुमार, हरेकृष्ण कुमार, सिंधु देवी, मार्कण्डेय कुमार, संजय कुमार, मनीषा, दीपा, श्रुति व अन्य लगे रहे।

शुक्रवार को गायत्री महायज्ञ के समापन पर मंच पर मौजूद मेयर बैन प्रिया व अन्य।

दैनिक भास्कर सहरसा 09-03-2024

सहरसा भास्कर

भागलपुर, शनिवार, 9 मार्च, 2024 | महिषी • सौरबाजार • नवहट्टा | सिमरी बख्तियारपुर • सोनवर्षाराज • कहरा | dainikbhaskar.com

गायत्री शक्तिपीठ में हजारों दीपो से जगमग होता रहा 51 कुंडीय महाअभियान यज्ञ स्थल

बड़ी तादाद में पहुंचे कार्यकर्ताओं ने दीप यज्ञ स्थल को खास बनाया

इंसान को नहीं छोड़ना चाहिए धर्म का मार्ग : सुनील

संवाद सूत्र, सहरसा: शहर के नया बाजार सराही स्थित गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन भी श्रद्धालुओं की भीड उमड़ी रही। शांतिकुंज हरिद्वार एवं गायत्री शक्तिपीठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चार दिवसीय राष्ट्र जागरण 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में संध्याकालीन कार्यक्रम में सत्संग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। बाल संस्कारशाला के बच्चों ने इंटरनेट मीडिया पर केंद्रित प्रेरणादायक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। जिसका मूल उद्देश्य समाज को इंटरनेट मीडिया और मोबाइल के दुष्प्रभाव से जागरूक करना था।

स्वरांजलि एवं शशि सरोजनी के कलाकारों ने गीत व नृत्य प्रस्तुत किया। शांतिकुंज से आए संत सुनील शर्मा ने कहा कि यज्ञ समाज में परिवर्तन का कार्य करता है। धर्म और अधर्म की लड़ाई में धर्म पराजित नहीं होता है। इसलिए इंसान को कभी धर्म का मार्ग नही छोड़ना चाहिए। सद्गुणों के समूह को भगवान कहते हैं। दीप यज्ञ से समाज का अंधकार दूर हो जाता है। प्रातः कालीन यज्ञस्थल पर देवपूजन हुआ एवं 51 कुंडों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ।

शक्ति के होते हैं तीन रूप : महाशिवरात्रि के अवसर पर 52 कुंडों पर शिवलिंग के प्रतीक रूप में रखकर महादेव एवं पार्वती की पूजा की गई। डा. अरुण कुमार जायसवाल ने महाशिवरात्रि के संबंध में कहा कि वर्ष में चार रात्रि होती है। जिसमें सबसे पहली और श्रेष्ठ रात्रि शिवरात्रि होती है। शक्ति के तीन रूप होते हैं लक्ष्मी, काली और सरस्वती। ये तीनों शक्तियां गायत्री मंत्र में निहित है। शिवलिंग पुरुष और प्रकृति का रूप है।

परमात्मा और प्रकृति के मिलन का प्रतीक है। उसके बाद गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई। समारोह में नगर निगम की महापौर बैन प्रिया सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

मनाया गया दीप महोत्सव : चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ के दौरान गुरूवार की देर शाम ही संध्याकालीन दीप महोत्सव मनाया गया। यज्ञ स्थल पर दीप महोत्सव में पूरे यज्ञ स्थल को दीपों से सजाया गया। हजारों दीपक से पूरा यज्ञस्थल दीपोमय होकर मानों ज्ञान का प्रकाश फैलाता रहा।

श्रद्धालुओं को संबोधित करते संत सुनील शर्मा • जागरण

शुक्रवार को हवन यज्ञ करते श्रद्धालुगण • जागरण

जलते दीपों से जगमग हुआ यज्ञ स्थल • जागरण

सत्संग श्रवण मनुष्य के जीवन के लिए अति आवश्यक

- गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन कराया गया हवन
- हवन के लिए बनाए गए हैं 51 कुंड
- हरिद्वार से आए आये संतों का हुआ प्रवचन

बुधवार को शहर के सराही मे चल रहे गायत्री महायज्ञ में हवन करते लोग। ● हिन्दुस्तान

सहरसा, नगर संवाददाता। राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के दुसरे दिन बुधवार को प्रथम सत्र का शुभारंभ सामुहिक योग, व्यायाम, जप और ध्यान से हुआ।

इस कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने योग के विभिन्न आसनों को जाना। उसका अभ्यास कर योग के लाभ को जाना। कार्यक्रम का संचालन करते हुए योगाचार्य सनोज कुमार ने बताया कि योग हमारे जीवन में कितना उपयोगी है। अगर अपने जीवन में खुश रहना है तो योग आवश्यक है। योग से हम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन बीता पाएंगे। समस्त योग का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश द्वारा किया गया।

योग के बाद सुबह साढ़े 8 बजे से देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुण्डों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ जो विधिवत संपन्न हुआ। प्रवचन के दौरान [illegible]कुंज से आए संत टोली नायक सुनील शर्मा ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते हुए कहा कि देश, धर्म, राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति के द्वारा किया गया। प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है। यज्ञ से हमारा जीवन ऊंचा उठता है और बिना सत्कर्म और सद्ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होता है। इससे पूर्व मंगलवार को संध्याकालीन सत्र में शांतिकुंज से आए टोली नायक संत सुनील शर्मा ने बताया कि सत्संग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है।

सत्संग के माध्यम से हम संपूर्ण इन्सान बनते हैं। युग परिवर्तन भौतिक कारणों से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से होता है। योग्यता को बढ़ाने वाला अज्ञानता को दूर करने वाला यह समय चल रहा है। यह युग परिवर्तन का समय है। शांतिकुंज प्रतिनिधि टोली नायक के साथ साथ टोली सह नायक बंशी लाल सोलंकी रामबीर नायक गायक दिलथीर यादव बादक और महेश तिवारी मंच का संचालन कर रहे थे।

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन गायत्री महायज्ञ प्रारंभ

देश, धर्म, राष्ट्र और संस्कृति के लिए किया जाने वाला प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है: सुनील शर्मा

भास्कर न्यूज|सहरसा

51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन यज्ञ में भाग लेते श्रद्धालु।

चार दिवसीय राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन बुधवार को प्रथम सत्र का शुभारंभ सामूहिक योग, व्यायाम, जप और ध्यान से हुआ। श्रद्धालुओं ने योग के विभिन्न आसनों को जाना और उसका अभ्यास कर योग के लाभ को समझने का प्रयास किया।कार्यक्रम का संचालन करते हुए योगाचार्य सनोज कुमार ने योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि योग हमारे जीवन में कितना उपयोगी है।अगर अपने जीवन में खुश रहना है तो योग करना आवश्यक है।योग से हम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन जी सकते हैं। इस अवसर पर समस्त योग का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश के द्वारा किया गया।

योग के बाद प्रातः 8.30 बजे से देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुण्डों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ। तथा इसे विधिवत रूप संपन्न किया गया। प्रवचन के दौरान शांतिकुंज हरिद्वार से आए संत टोली नायक सुनील शर्मा ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते हुए कहा कि देश,धर्म,राष्ट्र एवं संस्कृति के लिए व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है।

सत्संग हमारे जीवन के लिए आवश्यक, बनते हैं संपूर्ण इंसान

मंगलवार को संध्याकालीन सत्र को संबोधित करते हुए श्री शर्मा ने बताया कि सत्संग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है। सत्संग के माध्यम से हम संपूर्ण इन्सान बनते हैं। युग परिवर्तन भौतिक कारणों से नहीं,बल्कि आध्यात्मिक शक्तियों से होता है।उन्होंने कहा कि यह समय योग्यता को बढ़ाने वाला एवं अज्ञानता को दूर करने वाला है।यह युग परिवर्तन का समय है। महेश तिवारी के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में शांतिकुंज प्रतिनिधि टोली नायक सुनील शर्मा के साथ गायक बंशी लाल सोलंकी एवं रामबीर नायक तथा बादक दिलथीर यादव संगत कर रहे थे।

[illegible]र · 07 मार्च, 2024 — सहरसा जागरण

बिना सत्कर्म और सद्ज्ञान के मोक्ष की नहीं होगी प्राप्ति

हवन यज्ञ करते श्रद्धालुओं की टोली ● जागरण

प्रवचन देते शांतिकुंज हरिद्वार से आए टोली नायक सुनील शर्मा ● जागरण

संवाद सूत्र, सहरसा: गायत्री शक्तिपीठ एवं शांतिकुंज हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चार दिवसीय 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन प्रथम सत्र का शुभारंभ सामूहिक योग, व्यायाम, जप और ध्यान से हुआ। शहर के सराही- नया बाजार स्थित यज्ञ स्थल पर कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने योग के विभिन्न आसनों को जाना और उसका अभ्यास कर योग का लाभ लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए योगाचार्य सनोज कुमार ने बताया कि योग हमारे जीवन में उपयोगी है। अगर अपने जीवन में खुश रहना है तो योग आवश्यक है। योग से हम स्वास्थ्य [illegible] खुशहाल जीवन बिता पाएंगे। [illegible] का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश द्वारा किया गया। गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल के देखरेख में आयोजित योग के बाद देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुण्डों पर हवन यज्ञ का शुभारंभ हुआ। कई पालियों में श्रद्धालुओं ने हवन यज्ञ में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। शांतिकुंज हरिद्वार से आए संत टोली नायक सुनील शर्मा जी ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते हुए कहा- देश, धर्म, राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है।

यज्ञ से हमारा जीवन ऊंचा उठता है और बिना सत्कर्म और सद्ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होता है। शांतिकुंज से आए टोली नायक संत सुनील शर्मा ने बताया सत्संग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है। सत्संग के माध्यम से हम संपूर्ण इंसान बनते हैं। युग परिवर्तन भौतिक कारणों से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से होता है। योग्यता को बढ़ाने वाला अज्ञानता को दूर करने वाला यह समय चल रहा है। यह युग परिवर्तन का समय है। इससे पहले गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ने श्रद्धालुओं को हवन यज्ञ की महत्ता को बतलाते हुए कहा हवन से आत्म शुद्धि होती है। जीवन में खुशी और शांति के लिए यज्ञ जरूरी है। कार्यक्रम में शांतिकुंज प्रतिनिधि टोली नायक सुनील शर्मा के साथ साथ टोली सह नायक बंशी लाल सोलंकी, रामबीर नायक गायक, दिलथीर यादव वादक मौजूद, [illegible] महेश तिवारी ने मंच संचालन [illegible]

देश, धर्म, राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति का किया गया प्रत्येक कार्य बन जाता है यज्ञ

- गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन हुआ सामूहिक योग, व्यायाम, जप एवं ध्यान

संबोधित करते डॉ अरूण कुमार जायसवाल

सहरसा .राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन बुधवार को प्रथम सत्र का शुभारंभ सामूहिक योग, व्यायाम, जप एवं ध्यान से किया गया. कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों लोगों ने योग के विभिन्न आसनों को जाना एवं उसका अभ्यास किया. कार्यक्रम का संचालन करते योगाचार्य सनोज कुमार ने बताया कि योग हमारे जीवन में कितना उपयोगी है. उन्होंने कहा कि जीवन में खुश रहना है तो योग आवश्यक है. योग से हम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन बिता पायेंगे. समस्त योग का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश ने किया. योग के बाद देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुंडों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ. जो विधिवत संपन्न हुआ. प्रवचन के दौरान शांतिकुंज से आये संत टोली नायक सुनील शर्मा ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते कहा कि देश, धर्म, राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है. यज्ञ से हमारा जीवन ऊंचा उठता है एवं बिना सत्कर्म व सद्ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होता है. इससे पूर्व मंगलवार को संध्याकालीन सत्र में शांतिकुंज से आये टोली नायक संत सुनील शर्मा ने बताया कि सत्संग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है. सत्संग के माध्यम से हम संपूर्ण इंसान बनते हैं. युग परिवर्तन भौतिकी कारणों से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से होता है. योग्यता को बढ़ाने वाला अज्ञानता को दूर करने वाला यह समय चल रहा है. यह युग परिवर्तन का समय है. इस दौरान शांतिकुंज प्रतिनिधि टोली नायक सुनील शर्मा के साथ बंशीलाल सोलंकी, गायक रामवीर यादव, वादक दिलथीर यादव एवं मंच संचालन महेश तिवारी ने किया.

कार्यक्रम में मौजूद श्रद्धालु.

भौतिक से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से होता है युग परिवर्तन : सुनील शर[illegible]

सोनभद्र संवाददाता, सहरसा।राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के दुसरे दिन बुधवार को प्रथम सत्र का शुभारंभ सामुहिक योग, व्यायाम, जप और ध्यान से हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान सैकड़ो लोग योग के विभिन्न आसनो को जाना और उसका अभ्यास कर योग के लाभ को जाना। कार्यक्रम का संचालन करते हुए योगाचार्य सनोज कुमार ने बताया योग हमारे जीवन में कितना उपयोगी है। अगर अपने जीवन में खुश रहना है तो योग अवाश्यक है। योग से हम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन बीता पाएंगे। समस्त योग का प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश द्वारा किया गया।योग के बाद प्रातः 8-30 बजे से देव पूजन एवं यज्ञ के 51 कुण्डों पर गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ हुआ जो विधिवत संपन्न हुआ। प्रवचन के दौरान सातिकुंज से आए संत टोली नायक सुनील शर्मा ने युग ऋषि का अमृत संदेश देते हुए कहा-देश,धर्म,राष्ट्र संस्कृति के लिए व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञ बन जाता है। यज्ञ से हमारा जीवन ऊंचा उठता है और बिना सत्कर्म और सद्ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होता है।इससे पूर्व मंगलवार को संध्याकालीन सत्र में सातिकुंज से आए टोली नायक संत सुनील शर्मा ने बताया स[illegible] हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है। सत्सं[illegible] माध्यम से हम संपूर्ण इन्सान बनते है। युग परि[illegible] भौतिक कारणों से नहीं आध्यात्मिक शक्तियों से हो[illegible] योग्यता को बढ़ाने वाला अज्ञानता को दूर करने [illegible] यह समय चल रहा है। यह युग परिवर्तन का सम[illegible] इस दौरान शांतिकुंज प्रतिनिधि टोली नायक सुनील [illegible] के साथ साथ बंशी लाल सोलंकी टोली सह [illegible] रामबीर नायक गायक दिलथीर यादव वादक और [illegible] तिवारी मंच का संचालन कर रहे थे।ज्ञात हो कि [illegible] जागरण अभियान 52 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ [illegible] वार्ड नंबर 11नया बाजार में 5 से 8 मार्च को वि[illegible] संपन्न होने जा रहा है।

युग परिवर्तन भौतिक कारण सँ नहि अपितु आध्यात्मिक शक्तिक कारणें होइत अछि : सुनील शर्मा

- 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञक दोसर दिन योग, व्यायाम, जप आ ध्यान पर देल गेल प्रकाश

सहरसा, सम्पदिया

राष्ट्र जागरण अभियान 51 कुंडिय गायत्री महायज्ञ के दोसर दिन बुधदिन पहिल सत्र कए शुरुआत समूह योग, व्यायाम, जप आ ध्यान स भेल। एहि कार्यक्रमक दौरान सैकड़ों लोक योग कए विभिन्न आसन सीखल आ अभ्यास केलनि आ योग के लाभ सेहो सीखलनि।

कार्यक्रम कए संचालन करैत योगाचार्य सनोज कुमार कहलनि जे योग हमरा सबहक जीवन में कतेक उपयोगी अछि।यदि हम सब अपन जीवन में सुखी रहय चाहैत छी त योग आवश्यक अछि। योग कए माध्यम स सुन्दर स्वास्थ्य प्राप्त होइत अछि।आ सुखी जीवन जीबय मे सक्षम होयत।समस्त योग क प्रदर्शन योगाचार्य रजनीश द्वारा कयल गेल।योग के बाद भोर 8-30 बजे स देव पूजा आ यज्ञ के 51 कुंड पर गायत्री महायज्ञ कए शुरुआत भेल।

जे विधिवत पूरा भेल।प्रवचन कए दौरान शांतिकुंज स आयल संत टोली नायक सुनील शर्मा युग ऋषि के अमृत संदेश दैत कहलनि देशक लेल धर्म आ राष्ट्रीय संस्कृति, व्यक्ति के माध्यम स कयल हर काज यज्ञ बनि जाइत अछि।यज्ञ हमर जीवन कए ऊंचा करै छै आर बिना सत्कर्म आर सद्ज्ञान कए हम सब मोक्ष नहि पाबी सकै छी।

एकरा सँ पहिने मंगलकार के साँझुक सत्र मे शांतिकुंज स टोली नायक संत सुनील शर्मा कहला कि सत्संग हमर जीवन लेल बहुत महत्वपूर्ण अछि।सत्संग केर माध्यम स हम सब पूर्ण मनुष्य बनि जाइत छी समय के परिवर्तन भौतिक कारण स नै बल्कि आध्यात्मिक शक्ति के कारण होइत अछि।ई समय चलि रहल अछि जे क्षमता के बढ़ाबैत अछि आ अज्ञानता के दूर करैत अछि।ई युग परिवर्तन के समय अछि।

एहि दौरान शांतिकुंज के प्रतिनिधि समूह के नेता सुनील शर्मा के संग बंशी लाल सोलंकी समूह के सहनेता रामबीर नायक "गायक" दिलथीर यादव वाद्य वादक आ महेश तिवारी मंच संचालन क रहल छलाह।

जानल जाए जे राष्ट्र जागरण अभियान 52 कुंडिया गायत्री महायज्ञ वार्ड नम्बर 11 नया बाजार मे सराही 5 सँ 8 मार्च धरि औपचारिक रूप सँ सम्पन्न होयत जा रहल अछि।

[illegible]हरसा [illegible]ल/मधेपुरा — पटना। बृहस्पतिवार ● 7 मार्च ● 2024 — राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com

जन अधिकार[illegible] कोशी सीमांचल क[illegible] सफल बनाने के लिए

गायत्री शक्तिपीठ ने राष्ट्र जागरण के लिए गायत्री महायज्ञ का किया शुभारंभ

राष्ट्र जागरण में शामिल श्रद्धालु।

महिला श्रद्धालु।

■ सहरसा शहर (एसएनबी)।

राष्ट्र जागरण अभियान के निमित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सराही वार्ड 11 नयाबाजार में दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।

दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया, डा कल्याणी सिन्हा, प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजली के भारती, राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रवक्ता सुदीप प्रसाद सिंह, [illegible]टेन गौतम सिंह, सरिता पासवान उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह एवं अन्य परिजन के द्वारा मंत्र दुपट्टा एवं तिलक लगाकर किया गया। इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घड़ा मात्र है। जब हम 33 कोटि देवताओं का आवाहन कर स्थापित करेंगे तो वह मिट्टी का घड़ा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा। उन्होंने कहा-सिर्फ महिलाए हीं कलश धारण करने की अधिकारिणी है। कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन हीं नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है। वह मंगल कलश जिस जिस क्षेत्र, गली,मोहल्ले से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है। मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला, शहर के साथ साथ संपूर्ण समाज, राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डाक्टर कल्याणी सिन्हा ने कहा श्री जायसवाल जी ने अपना सारा जीवन समाज को समर्पित कर दिया।

हम जो सोचते है और करते है हमारे आनेवाली पीढ़ी वैसा हीं करती और सोचती है। उन्होंने खर्चीली शादी के संबंध मे समाज को जागरूक होना की बात कही। सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने की खुशी जताई। महापौर बैन प्रिया ने कहा-ई वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है। प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय राष्ट्र जागृति का समय है। इस मंगल कलश यात्रा में लगभग एक हजार से भी ज्यादे महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण किए। मंगल कलश के पूजन में गायत्रि शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा, मधु, ज्योति, श्रुति एवं प्रखर थे। मंगल कलश यात्रा मे विभिन्न प्रकार के झांकियां प्रस्तुत की गई जिसमें बाइक गायत्री मंत्र का बैनर, गुरुदेव गुरूसत्ता रथ, स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता, शंकर आदि झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संज[illegible] सराही एवं सभी सदस्य तथा हजारों पुरुष [illegible] महिलाएं शामिल थे।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का हुआ आयोजन

भास्कर न्यूज़|सहरसा

जीवन में सफल होने के लिए दो सूत्र हैं-एक आत्मविश्वास और दूसरा ईश्वर विश्वास। आत्मविश्वास होगा तो मेहनत करेंगे और जीवन में सफल हो जाएंगे। ईश्वर के प्रति विश्वास होगा तो उनकी कृपा का आवाहन करेंगे और सफल हो जाएंगे। जीवन में सफल होने के लिए दोनों बातें महत्वपूर्ण है। ये बातें डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। अहंकार रुपी पत्थर के नीचे जीवन का मर्म दबा रह जाता है। भले ही आप भौतिक रुप से संपन्न हों, पर आप अंदर से परेशान रहेंगे। उन्होंने कहा कि प्रार्थना ध्यान से भाव को शुद्ध कीजिए, भावना पवित्र हो तो परमात्मा के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

संबोधित करते डॉ. अरुण जायसवाल।

अहंकार रूपी पत्थर के नीचे जीवन का मर्म रह जाता है दबा

▫ गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि जीवन में सफल होने के लिए दो सूत्र आत्मविश्वास व ईश्वर विश्वास.हैं. आत्मविश्वास होगा तो जीवन में सफल हो जायेंगे व मेहनत करेंगे. ईश्वर विश्वास होगा तो उनकी कृपा का आह्वान करेंगे व सफल हो जायेंगे. जीवन में सफल होने के लिए दोनों बातें महत्वपूर्ण है. सिर्फ आत्मविश्वास ही गड़बड़ है. सिर्फ आत्मविश्वास है मेहनत किया सफल हो गये तो अहंकार हो गया. फिर अहंकार आपको डूबो देगा. अहंकार रुपी पत्थर के नीचे जीवन का मर्म दबा रह जाता है. भले ही भौतिक रुप से संपन्न हों, लेकिन अंदर से परेशान रहेंगे. सिर्फ ईश्वर विश्वास आलस्य पैदा करता है. पवित्र भाव हो तो जीवन में अवश्य सफल हो सकते हैं. प्रार्थना ध्यान से भाव को शुद्ध करें. भावना पवित्र होगी तो परमात्मा के प्रति विश्वास बढेगा. अंदर सुरक्षित महसूस करेंगे. भावना में गहराई बढ़ती है तो प्यार बढ़ता है. भावना का विस्तार होगा तो दोस्ती, भावना में गहराई होगी तो प्यार. प्यार दो से एक कर देता है. भगवान कृष्ण से सभी प्रेम करते हैं. लेकिन कृष्ण राधा से प्रेम करते हैं. राधा के प्रेम में गहराई है. प्रेम देह से आत्मा तक की यात्रा है.

सत्र को संबोधित करते डॉ अरूण जयसवाल

सफल होने के लिए हैं दो सूत्र, आत्मविश्वास और ईश्वर में विश्वा[स]

संवाद सूत्र, सहरसा: रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि जीवन में सफल होने के लिए दो सूत्र है आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास। आत्मविश्वास होगा तो जीवन में सफल हो जाएंगे और मेहनत करेंगे। ईश्वर विश्वास होगा तो उनकी कृपा का आवाहन करेंगे और सफल हो जाएंगे। जीवन में सफल होने के लिए दोनों बातें महत्वपूर्ण है। सिर्फ आत्मविश्वास ही गडबड है। सिर्फ आत्मविश्वास है, मेहनत किया सफल हो गए तो अहंकार हो गया। फिर अहंकार आपको डुबो देगा। अहंकार रुपी पत्थर के नीचे जीवन का मर्म दबा रह जाता है। भले ही आप भौतिक रुप से संपन्न हों, पर आप अंदर से परेशान रहेंगे। सिर्फ ईश्वर विश्वास आलस्य पैदा करता है। यह सब निर्भर करता है आपके भावना और पवित्र ऊर्जा पर। पवित्र [भाव] हो तो जीवन में आप अवश्य सफल हो सकते हैं। प्रार्थना ध्यान से भाव को शुद्ध कीजिए, भावना पवित्र होगी तो परमात्मा के प्रति विश्वास बढेगा ,अंदर सुरक्षित महसुस करेंगे। भावना में गहराई बढ़ती है तो प्यार बढ़ता है। भावना का विस्तार होगा तो दोस्ती , भावना की गहराई होगी तो प्यार। प्यार दो से एक कर देता है। भगवान कृष्ण से सभी प्रेम करते हैं लेकिन कृष्ण- राधा से प्रेम करते हैं, क्योंकि राधा के प्रेम में गहराई है। दरअसल प्रेम देह से आत्मा तक की यात्रा है। दोस्ती आत्मा तक की यात्रा नहीं है। व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में बडी संख्या में विभिन्न स्कूल-कालेज के छात्र- छात्रा मौजूद थे।

शक्तिपीठ में संबोधित करते ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल • जागरण

मां दुर्गा, काली और सरस्वती की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा आज

संस, सहरसा: कहरा गांव स्थित नाथ बाबा स्थान परिसर में नवनिर्मित मंदिर में मां दुर्गा, सरस्वती एवं मां काली की मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा को लेकर रविवार को पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा-अर्चना दिनभर जारी रहा। सोमवार को इन तीनों मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा

विधिवत संपन्न होगा। इससे पूर्व शनिवार को भव्य मंगल कलश यात्रा निकाली गई। कहरा व अगल-बगल के गांव की 551 महिलाओं ने अपने माथे पर कलश धारण कर गाजे- बाजे के साथ गांव भ्रमण किया। रविवार को मंदिर के निर्माणकर्ता एवं कार्यक्रम के मुख्य आयोजक वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेंद्र कुमार झा अनीश झा ने धर्मपत्नी नंदा झा के साथ वैदिक रीति से पूजा- अर्चना की। इस मौके पर पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सीएस झा, सहरसा के जिला एवं सत्र न्यायाधीश, गोपालजी, एसडीजेएम चंदन कुमार, सीजेएम संतोष कुमार, परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश बलराम दूबे, समेत अन्य न्यायाधीश, डा. अभिजीत झा, अधिवक्ता विलास राय, पंडित रमेश झा, पंडित पशुपति झा, अवधेश मिश्र, महावीर झा आदि मौजूद रहे। आयोजक वीरेंद्र कुमार झा अनीश ने बताया कि इस मंदिर का निर्माण स्वर्गीय सतीश मिश्र के द्वारा प्रारंभ कराया गया था। उनके और मुख्य कारीगर के कोरोना में निधन के कारण इसमें अवरोध आया। बाद में उन्होंने अपने पुत्र डा. अभिजीत झा के प्रयास से यह मंगल कार्य पूरा किया।

प्राण- प्रतिष्ठा को लेकर चल रहा पूजन कर्मछाया • जागरण

18.03.2024

आज सूर्यास्त 06:00 बजे | कल सूर्योदय 05:56 बजे | prabhatkhabar.com

संवेदना हमेशा सेवा की कोख से जन्म लेती है: डॉ अरुण

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र से पूर्व रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ व विभिन्न संस्कार किया गया. परिष्कार सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ध्यान मन का स्नान है. ध्यान से हम ऊर्जावान, तेजवान बनते हैं. हमारे मन की कोठरी में चारों ओर अंधेरा भरा पड़ा है, वह कैसे दूर हो.

इसके लिए भगवान की साधना, आराधना, उपासना करें. भगवान का मतलब विभूतियों का समूह ही भगवान है. भगवान के मूर्ति के समक्ष प्रसाद चढ़ा दिया, पूजा-पाठ कर लिया, माला फेर लिया, इससे अपका कोई भला नहीं होगा. अंदर भी वृद्धि आये, इसलिए भगवान का साधन उपासना एवं आराधना करें. भगवान सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिमान हैं. उन्होंने कहा कि जानकारी जब ज्ञान में उतरे तब उसे ज्ञान कहते हैं. इन्द्रियां भी उसको अनुभव करती है. संवेदना हमेशा सेवा की कोख से जन्म लेती है एवं सारे दुर्गुण, निष्ठुरता के कोख से पैदा लेते हैं. दया, समता, ममता, प्रेम ये सभी संवेदना के कोख से पैदा लेते हैं.

छल-प्रपंच, कपट यह सभी निष्ठुरता के कोख से पैदा लेते हैं. उन्होंने सेवा के संबंध में कहा कि ऐसी सेवा हो, जिसके अंदर आपके मन का दर्द छिपा हो. सेवा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें अहंकार विसर्जित हो. जहां अहंकार संवर्धित होता है, वह सेवा नहीं है. जहां अहंकार विसर्जित होता है, वह सेवा है.

इस मौके पर विशिष्ट अतिथि जेडीयू एमएलसी डॉ कुमुद वर्मा एवं नारी सशक्तिकरण सह अध्यक्ष रिटायर्ड इंजीनियर अभिजात वर्मा, अंडर सेक्रेटरी शैलेश कुमार, साथ ही एक्स सिक्यूरिटी बीबीएसपी प्रभात कुमार सिन्हा व अन्य मौजूद थे. वहीं 24 मार्च को संध्याकालीन चार बजे से शक्तिपीठ में होली मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित होगा.

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

लोगों को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल व सत्र में मौजूद अतिथि.

स्थूल, सूक्ष्म व कारण से बनता है तीन शरीर

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने शरीर में परमेश्वर की स्थापना किस प्रकार होगी इस विषय पर बोलते हुए कहा कि हमारा तीन शरीर होता है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण स्थूल दृश्यमान होता है, परंतु सूक्ष्म और कारण दिखाई नहीं देता पर इसका अस्तित्व है। कहा कि स्थूल शरीर हमारा भौतिक शरीर है, जिससे हम काम करते हैं, मेहनत करते हैं। सूक्ष्म शरीर हमारा विचार शरीर है। उसमें विचार, निर्णय, विश्लेषण, ज्ञान होता है। कारण शरीर हमारा भाव शरीर है। कारण शरीर में भाव, श्रद्धा ,विश्वास, भक्ति, एहसास होता है। अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं,भगवान को अपने हृदय में बैठाते हैं, तो कारण शरीर में भगवान की प्रतिष्ठा हो गई। कहा कि हम भगवान के बारे में तर्क वितर्क और कुतर्क करते हैं। वही व्याख्या करते हैं, किंतु भगवान को हम अपनी भावनाओं में केंद्रीय स्थान नहीं दिया और भगवान हमारे जीवन के मुख्यतत्व हो जाते है।,हमारी भावनाओं में केंद्र बन जाते हैं, तो भगवान का एहसास भी प्रबल हो जाता है। उपनिषद में भी परमात्मा के भावनात्मक स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है "रसोवसः" यानि भगवान रसमय है। हमारे जीवन में जो रस है उसका मूल स्वरूप परमात्मा है। परमात्मा केवल तर्क और विचार का विषय नहीं है, बल्कि जीवन में अनुभूति का विषय है। इस अवसर पर सीजेएम समस्तीपुर किशोर कुमार, कार्यपालक अभियंता पटना, प्रियंवदा, अवकाश प्राप्त जिला अभियोजन पदाधिकारी, दिलीप कुमार, आदि ने भी सत्र को संबोधित किया।

सत्र को संबोधित करते ट्रस्टीछाया • सौजन्यः शक्तिपीठ

गायत्री शक्तिपीठ द्वारा परिष्कार सत्र का आयोजन

जीवन के रस का मूल स्वरूप है परमात्मा : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

सोनभद्र संवाददाता, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-कारण शरीर में परमेश्वर की स्थापना किस प्रकार होगी। इस विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा-हमारा तीन शरीर होता है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल दृश्यमान होता है पर सूक्ष्म और कारण दिखाई नहीं देता पर होता है। स्थूल शरीर हमारा भौतिक शरीर है जिससे हम काम करते हैं,मेहनत करते हैं। सूक्ष्म शरीर हमारा विचार शरीर है उसमें विचार, निर्णय, विश्लेषण, ज्ञान होता है। कारण शरीर [हमारा] भाव शरीर है। कारण शरीर में भाव, श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, एहसास होता है। अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं, भगवान को अपने हृदय में बिठाते हैं तो कारण शरीर में भगवान की प्रतिष्ठा हो गई। हम भगवान के वारे में तर्क वितर्क और कुतर्क करते हैं।वही व्याख्या करते हैं किन्तु भगवान को हम अपनी भावनाओं में केन्द्रीय स्थान नहीं दिया और भगवान हमारे जीवन के मुख्यतत्व हो जाते हैं। हमारे भावनाओं में केन्द्र बन जाते हैं तो भगवान का एहसास भी प्रबल हो जाता है और उनकी सहायता भी मिलती है। यानी जीवन में भगवान प्रतिष्ठित हो गए। उपनिषद में भी परमात्मा के भावनात्मक स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है रसोवसः यानी भगवान रसमय है। हमारे जीवन में जो रस है उसका मूल स्वरूप परमात्मा है। परमात्मा केवल तर्क और विचार का विषय नहीं है, जीवन में अनुभूति का विषय है। इस अवसर पर किशोर कुमार-सी जी एम समस्तीपुर, प्रियंवदा एक्स्क्युटिव ईन्जीनियर पटना, दिलीप कुमार-अवकाश प्राप्त जिला अभियोजन-गया, कुंती देवी-गृहणी उपस्थित थे। इन सबों ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा-इस सत्र की अनुभूति सुखद रहा।संध्याकालीन 4 बजे से होली मिलन समारोह कार्यक्रम है। जिसमें नृत्य,संगीत एवं भगवा[न] नरसिंह का विशिष्ट पूजन होगा।

गायत्री शक्तिपीठ द्वारा परिष्कार सत्र आयोजित

हमारे जीवन में जो रस है उसका मूल स्वरूप परमात्मा है : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/ सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-कारण शरीर में परमेश्वर की स्थापना किस प्रकार होगी।इस विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा-हमारा तीन शरीर होता है।स्थूल, सूक्ष्म और कारण।स्थूल दृश्यमान होता है पर सूक्ष्म और कारण दिखाई नहीं देता पर होता है।स्थूल शरीर हमारा भौतिक शरीर है जिससे हम काम करते हैं,मेहनत करते हैं।सूक्ष्म शरीर हमारा विचार शरीर है उसमें विचार, निर्णय, विश्लेषण,ज्ञान होता है।कारण शरीर हमारा भाव शरीर है।कारण शरीर में भाव,श्रद्धा ,विश्वास, भक्ति,एहसास होता है।अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं,भगवान को अपने हृदय में बिठाते हैं तो कारण शरीर में भगवान की प्रतिष्ठा हो गई।हम भगवान के बारे में तर्क वितर्क और कुतर्क करते हैं।वही व्याख्या करते हैं किन्तु भगवान को हम अपनी भावनाओं में केन्द्रीय स्थान नहीं दिया और भगवान हमारे जीवन के मुख्यतत्व हो जाते हैं।हमारे भावनाओं में केन्द्र बन जाते हैं तो भगवान का एहसास भी प्रबल हो जाता है और उनकी सहायता भी मिलती है।यानी जीवन में भगवान प्रतिष्ठित हो गए। उपनिषद में भी परमात्मा के भावनात्मक स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है रसोवसः यानी भगवान रसमय है।हमारे जीवन में जो रस है उसका मूल स्वरूप परमात्मा है।परमात्मा केवल तर्क और विचार का विषय नहीं है,जीवन में अनुभूति का विषय है।इस अवसर पर किशोर कुमार-सी जी एम समस्तीपुर, प्रियंवदा एक्स्क्युटिव ईन्जीनियर पटना,दिलीप कुमार-अवकाश प्राप्त जिला अभियोजन-गया, कुंती देवी-गृहणी उपस्थित थे।इन सबों ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा-इस सत्र की अनुभूति सुखद रहा।संध्याकालीन 4 बजे से होली मिलन समारोह कार्यक्रम है। जिसमें नृत्य,संगीत एवं भगवान नरसिंह का विशिष्ट पूजन होगा।

अबैध शराब तस्करों के खिलाफ अभियान चलाते पतरघट पुलिस

मीडिया दर्शन/ पतरघट सहरसा। आगामी लोकसभा एवं होली में हुड़दंगियों पर नकेल कसने के लिए पतरघट एवं पस्तपार पुलिस ने रविवार को दर्जनों बाइक पर सवार होकर क्षेत्र का दौरा किया। तथा वाहन चेकिंग करते गुप्त सूचना पर अबैध शराब तस्करों के खिलाफ अभियान चलाते छापेमारी किया।थाना अध्यक्ष पुनि अजय कुमार पासवान के नेतृत्व में पतरघट एवं पस्तपार थाना का पुलिस अधिकारियों ने पतरघट, कपसिया, विशनपुर, टेकनमा, घोघनपट्टी , पीपरा, गोलमा, जम्हरा, पामा, किशनपुर, पस्तपार सहित कई जगहों पर वाहन चेकिंग एवं छापेमारी किया। तथा छापेमारी में देसी विदेशी शराब बरामद करते कई तस्कर को गिरफ्तार किया है। पुलिस की इस कार्रवाई से शराब तस्कर एवं हुड़दंगियों में दहशत है। पुलिस कार्रवाई में थाना अध्यक्ष सहित पस्तपार प्रभारी पुअनि पंकज कुमार यादव, पुअनि बरूण कुमार शर्मा, पुअनि नीरज कुमार पासवान, पुअनि राजकिशोर प्रसाद सहित कई अधिकारी एवं पुलिस बल व चौकीदार मौजूद थें।

जी एस न्यूज **सहरसा**

गायत्री शक्तिपीठ द्वारा राष्ट्र जागरण के लिए चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ शुभारंभ

जीएस न्यूज।सहरसा

राष्ट्र जागरण अभियान के निमित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सराही वार्ड नंबर 11,नया बाजार में मंगलवार को दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया।डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया जाता है।दीप प्रज्वलन में विशेष अतिथि महापौर बैन प्रिया,डा कल्याणी सिन्हा,प्राचार्या रेणु सिंह, स्वरांजली के भारती,राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रवक्ता सुदीप प्रसाद सिंह,कैप्टेन गौतम सिंह,सरिता पासवान उपस्थित थे।विशिष्ट अतिथि का स्वागत ललन कुमार सिंह एवं अन्य परिजन के द्वारा मंत्र दुपट्टा एवं तिलक लगाकर किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कलश के संबंध में कहा अभी यह कलश मात्र मिट्टी का घड़ा मात्र है।जब हम 33 कोटि देवताओं का आवाहन कर स्थापित करेंगे तो यह मिट्टी का घड़ा नहीं रहकर मंगल कलश हो जाएगा।उन्होंने कहा-सिर्फ महिलाए हीं कलश धारण करने की अधिकारिणी है।कलश यात्रा सिर्फ धार्मिक पूजन हीं नहीं बल्कि जन जागरण की संपूर्ण व्यवस्था है।यह मंगल कलश जिस जिस क्षेत्र, गली,मोहल्ले से होकर गुजरता है वहां की नकारात्मकता स्वतः ही मिट जाती है।मंगल कलश यात्रा से क्षेत्र, मोहल्ला,शहर के साथ साथ संपूर्ण समाज,राष्ट्र एवं संपूर्ण पृथ्वी का उत्थान होता है।इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डाक्टर कल्याणी सिन्हा ने कहा श्री जायसवाल जी ने अपना सारा जीवन समाज को समर्पित कर दिया।हम जो सोचते हैं और करते हैं हमारे आनेवाली पीढ़ी वैसा हीं करती और सोचती है।उन्होंने खर्चीली शादी के संबंध मे समाज को जागरूक होना की बात कही।सरिता पासवान ने यज्ञ में शामिल होने की खुशी जताई।महापौर बैन प्रिया ने कहा-ईश्वर हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए मां को बनाया है।प्राचार्या रेणु सिंह ने कहा यह समय राष्ट्र जागृति का समय है।इस मंगल कलश यात्रा में लगभग एक हजार से भी ज्यादे महिलाए अपने सिर पर मंगल कलश धारण किए।मंगल कलश के पूजन में गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा, मधु, ज्योति,श्रुति,एवं प्रखर थे।मंगल कलश यात्रा में विभिन्न प्रकार के झांकियां प्रस्तुत की गई जिसमें बाइक गायत्री मंत्र का बैनर,गुरुदेव गुरुसत्ता रथ,स्वरांजली और बालसंस्कार शाला के बच्चों द्वारा पर्यावरण, भगवान राम, सीता,शंकर आदि झांकी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष संजय सराही एवं सभी सदस्य तथा हजारों पुरुष एवं महिलाएं इसमें शामि

दारुण दुख व दारूण रात्रि को खुशी में बदलना ही होली पर्व का संदेश हैः डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ मे संध्याकालीन होलिका दहन कार्यक्रम के पूर्व डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने होली के संबंध में विस्तार से बताते हुए कहा साल में चार नवरात्रि होती है।दो प्रत्यक्ष और दो अप्रत्यक्ष। ये चार रात्रियां वर्ष में बहुत महत्वपूर्ण होती है।एक शिवरात्रि जिसे महाशिवरात्रि कहते हैं।शिव और शक्ति का मिलन महारात्रि है।दूसरा होली की रात्रि जिसे दारूण रात्रि कहते हैं।दारूण खत्म हो कष्ट कठिनाई खत्म हो और वह खुशी की रात्रि में बदले उत्कर्ष की रात्रि में बदले।और तीसरी रात्रि जन्माष्टमी की रात्रि होती है।वह मोह रात्रि होती है।मोह खत्म हो और भगवान कृष्ण का प्रादुर्भाव हो और हमारे जीवन में प्रेम बरसे।मोह रात्रि को प्रेम की रात्रि में बदले,और चौथी रात्रि को कालरात्रि कहते हैं।जिसे हम दिपावली के दिन हम काली पूजा करते हैं।काल का भय खत्म हो।महाकाली का पूजन करते हैं।दारूण रात्रि को खुशी में बदलना ही होली पर्व का संदेश है।उल्लास उमंग, एकता,समता भाईचारा का पर्व है होली।दुश्मनी को दोस्ती में बदलने का पर्व है होली।होलिका के संबंध में उन्होंने कहा-होली अवसर देता है कि वरदान किस प्रकार का दुरूपयोग बन जाता है। इसे जानने समझने का पर्व है होली। होलिका को वरदान था वह अग्नि से नहीं जलेगी लेकिन वरदान का दुरूपयोग किया और वह जलकर मर गई। अपनी बुराई, अपना अहंकार, अपना स्वार्थ इस पर्व में जला दें,तभी होली मनाना सार्थक होगा। छल प्रपंच, धोखा,बेईमानी आपके सौभाग्य को दुर्भाग्य में बदल देगा।इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ होली के गीतों से हुआ।अरुण कुमार जायसवाल द्वारा गीत-होली का आया त्योहार बहार लिए संग में।तथा रसिया आज बिरज में होली रे शक्तिपीठ के लडकियां ने होली गीत गाए ।रसिया,अंग से अंग लगाना सजन मोहे ऐसी रंग लगाना तथा शास्त्रीय संगीत हुए।तबला पर संगत प्रोफेसर गौतम सिंह, हारमोनियम पर वेदप्रकाश, तथा नाल पर शंकर जी थे।वही स्वरांजली के कलाकारों द्वारा रंगारंग नृत्य आकर्षण का केन्द्र बना रहा।श्रद्धालुगण इस आकर्षक नृत्य को देख कर हर्षोल्लास के साथ झूमते हुए तालियां बजाते रहे।कार्यक्रम के बाद भगवान नरसिंह का विधि-विधान के साथ पूजन हुआ। पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देव कान्या ने की।पूजनोपरान्त होलिका दहन कार्यक्रम हुआ तथा श्रद्धालुगण पकौडा तथा बड़ा का प्रसाद ग्रहण किए।इस अवसर पर दिलीप कुमार जिला नियोजन पदाधिकारी,किशोर कुमार, एस जी एम समस्तीपुर-,प्रियंवदा एक्स्क्युटिव ईन्जीनियर पटना, ज्योति कुमार, ए डी एम,कुंती देवी गृहिणी के साथ साथ अनेकों गणमान्य लोग तथा शक्तिपीठ के सभी परिजन उपस्थित थे।

मिट्टी स्नान

मिट्टी के स्नान के लाभ कथित तौर पर असंख्य हैं। मिट्टी की गर्मी रक्त प्रवाह को बढ़ाने और प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करने में मदद करती है, जबकि माना जाता है कि मिट्टी में मौजूद खनिजों में कई प्रकार के उपचार गुण होते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि मिट्टी से नहाने से शरीर को विषमुक्त करने, मांसपेशियों के दर्द और तनाव को कम करने और स्वस्थ त्वचा को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस पर मिट्टी स्नान के प्रभाव की जांच करने वाले अध्ययनों की 2021 की व्यवस्थित समीक्षा ने निष्कर्ष निकाला गया कि मिट्टी स्नान चिकित्सा "पारंपरिक चिकित्सा का विकल्प नहीं हो सकती" लेकिन इसके अतिरिक्त इसका उपयोग किया जा सकता है।

माना जाता है कि शारीरिक लाभों के अलावा, मिट्टी से स्नान करने से दिमाग पर आराम और ताजगी भरा प्रभाव पड़ता है। बहुत से लोग पाते हैं कि मिट्टी की गर्म, सुखदायक अनुभूति तनाव को कम करने और कल्याण की भावना को बढ़ावा देने में मदद करती है।

माह मार्च में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- डॉ0 कुमुद वर्मा, विधान परिषद सदस्य(एमएलसी) पटना- व्यक्तिव परिष्कार सत्र, नतिनी के अन्नप्राशन संस्कार एवं यज्ञ के लिए
- अभिजात वर्मा(बाल संरक्षण एवं नारी सशक्तिकरण अध्यक्ष सह रिटायर्ड इंजीनियर जल संसाधन विभाग) पटना - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, पौत्र के अन्नप्राशन संस्कार एवं यज्ञ के लिए
- प्रभात कुमार सिंहा (रिटायर्ड आईएएस पूर्व सचिव बीपीएससी) पटना - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, रुद्राभिषेक एवं यज्ञ के लिए
- डॉ0 किशोर कुणाल (CJM समस्तीपुर)- व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक एवं यज्ञ के लिए
- श्री मति प्रियम्बदा, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर PHED, समस्तीपुर - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक एवं यज्ञ के लिए
- श्री दिलीप कुमार (सेवानिवृत्ति नियोजन पदाधिकारी) गया - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक एवं यज्ञ के लिए
- श्री मति कुंती, गया - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक एवं यज्ञ के लिए

आगामी कार्यक्रम

9 अप्रैल सामूहिक नवरात्रि अनुष्ठान संकल्प

17 अप्रैल पूर्णाहुति

प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

पुनः नववर्ष आ गया है -----

चैत्र नवरात्र क्या आया, पुनः नववर्ष आ गया है
नव प्रभात में नया हर्ष है, नया आकाश है, नया प्रकाश है ।
नयी है लालिमा, छँटी कालिमा, धरती पर फैल रही हरीतिमा
मनप्रांत में अब तो देखो, सर्वत्र छा रही खुशियों की नीलिमा ।।
पुनः नववर्ष आ गया है -----
नयी उमंग है, नयी है आशा, मुँह छुपाकर भाग रही निराशा
दुर्गा के प्रचंड तेज से, अनास्था का दुर्ग हिला है ।
नयी श्रद्धा है, नया विश्वास है, ईश्वर सबके पास खड़े हैं
नयी है प्रकृति, नया पुरुष है, नए कल्प का नया संकल्प है ।।
पुनः नववर्ष आ गया है -----
अधर्म की अब उड़ जाएँ धज्जियाँ, आवाज हो धू-धू-चट-चट की
स्वयं सारथी हों माँ गायत्री, हमसब उनके भक्त बन जाएँ ।
नई निष्ठा की नई पौध से, लहलहा उठे यह सारी धरित्री
धर्म अधर्म का जंग छिड़ा जो, उसमें विजय धर्म को मिल जाए ।।
पुनः नववर्ष आ गया है -----
सन्तों के सारे सपने, अब नहीं रहें सपने ही केवल
हो जाए सतयुग की वापसी, स्वर्ग से उतरें देवी-देवता ।
मरकत मणियों से सजा लें, हम मनुज अपने मन की सीढियाँ
फिर स्वर्गारोहण का समा एक अद्‌भुत, धरती पर क्यों नहीं बँधेगा ।
पुनः नववर्ष आ गया है -----
आओ आरती थाल सजाकर, मनों का मालिन्य मन से दूर कर दें
आशाओं का दीप जलाकर, निराशाओं का धुँध छाँट दें ।
प्रकृति और पुरुष रूप में, माँ गायत्री हमपर आशीष बरसाएँ
कर दें हर्षित सबको ही वे, बुझे मनों में नववर्ष दीप जला दें ।।
पुनः नववर्ष आ गया है -----

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	**:**	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	**:**	**06478-228787, 9470454241**
Email	**:**	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	**:**	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	**रू**	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/